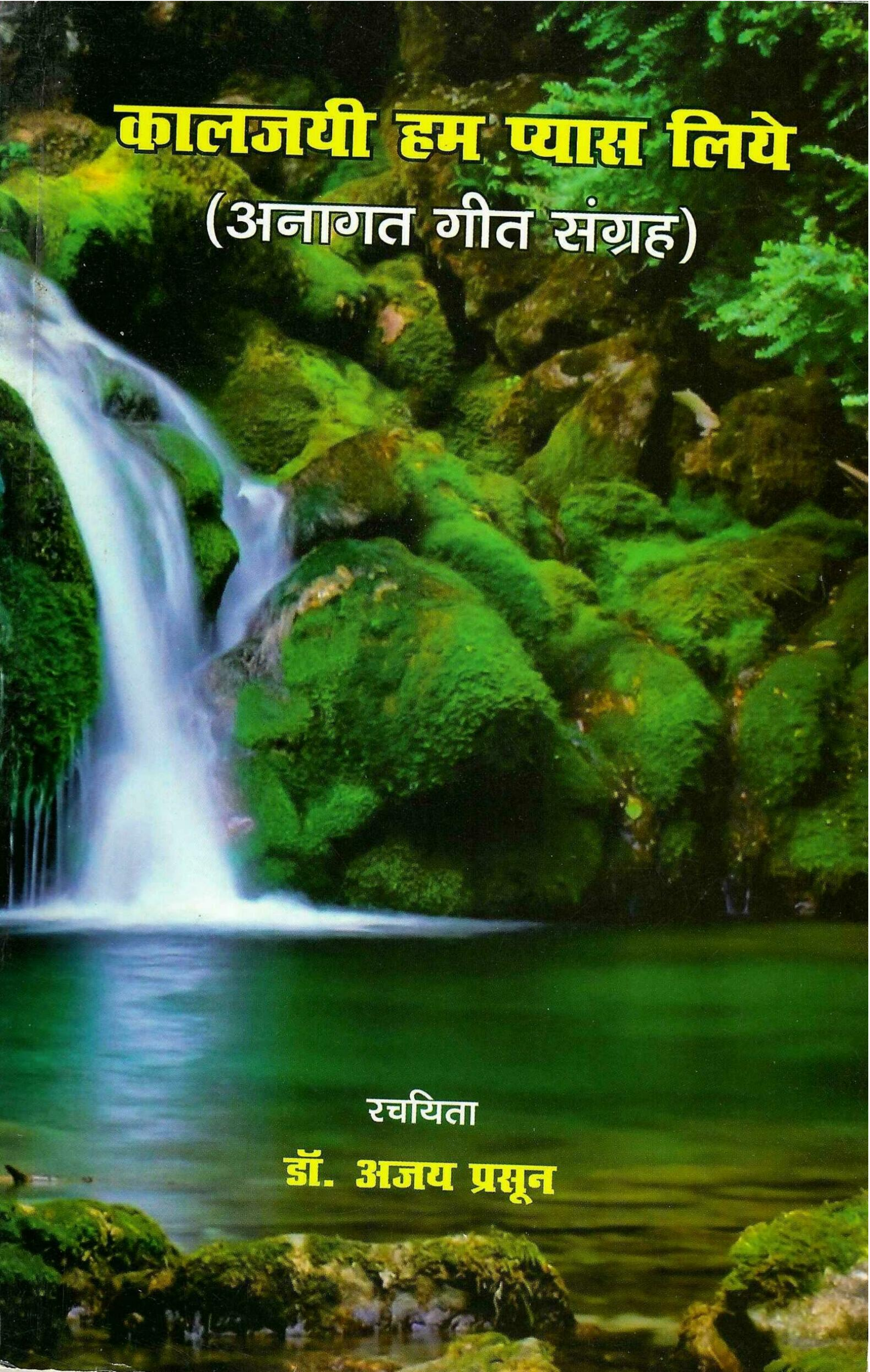

कालजयी हम प्यास लिये

(अनागत गीत संग्रह)

रचयिता

डॉ. अजय प्रसून

ॐ

कालजयी हम प्यास लिये

(अनागत गीत संग्रह)

रचयिता

डॉ. अजय प्रसून

अनागत गीत-संग्रह

'कालजयी हम प्यास लिये'

रचयिता

डा. अजय कुमार द्विवेदी 'अजय प्रसून'

कापीराइट : डा. अजय कुमार द्विवेदी 'अजय प्रसून'

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : रू. 125/ (एक सौ पचीस रूपये)

कालजयी हम प्यास लिये (गीत-संग्रह) – 2017

538, II / 318 योगी नगर, त्रिवेणी नगर III, सीतापुर रोड, लखनऊ – 22602
मोबाइल नं. 9305107455

मुद्रक

माहेश्वरी एण्ड संस , 289/214, मोतीनगर – लखनऊ – 226004

मोबाइल नं. 9450686351, दूरभाष : 0522 / 4071816

•

अनुक्रमणिका

- प्रस्तावना प्रो. सोम ठाकुर 05
- समीक्षा-स्वर 12
- डॉ. राहुल मिश्र 12
- श्री ओम नीरव 14
- श्री दिनेश सोनी 15
- श्री आदित्य चतुर्वेदी 16
- श्री प्रवीण कुमार शुक्ला 'गोबर गणेश' 17
- श्री शरद कुमार पाण्डेय 'शशांक' 18
- अपनी बात डॉ. अजय 'प्रसून' 19
- प्रार्थना यही है मातु शारदे 22
- गीत रसना गा नहीं सकती 23
- अगर तुम चाह जाओगे 24
- हम अभी हारे नहीं हैं 25
- हम तो ऐसे मछेरे रहे 26
- जीवन मरता नही है 27
- जन्म-जन्म से सो नहीं सका 28
- मन की भावना नहीं चुरा सकी 30
- रोशनी की बात हो 31
- अब न देर कीजिए 32
- छंद नव लिखे अंग-अंग में 34
- सच टूटा हुआ तारा नहीं 35
- जो उदासी भर गयी 36
- एक समय ऐसा भी आता 38
- जितनी खुशियाँ पास थी 39
- 40 बस तुम्हारे न मन तक गये
- 41 संध्या के ढ़लते सूरज सी
- 43 जब आते है दिन बसंत के
- 44 एक मधुर मुस्कान घोलकर
- 45 चंदन में आग वो लगा दी
- 46 मंदिरों के द्वार पर झुकते हुए
- 47 जब भी कोई दर्पण चटका
- 48 यह अनुबंध मनुजता के हैं
- 49 होनी तो होकर रहती है
- 50 हवा मकानों में जब आती
- 51 कहने को अपना घर
- 52 भीग-भीग जाती पलकों की कोर
- 54 देह को कंचन कर देगा
- 55 जिसमें तैरी ये सदी है दोस्तों
- 57 फिर नये सपने जगे हैं
- 58 समय को पूजिये
- 60 मरू का सागर पचा रही है
- 61 प्यार ही यदि खो गया
- 63 रचवा ली शादी
- 65 हमारी पलक नहीं झपकी
- 66 गीत वन पलाश का हुआ सपन
- 67 मधुमास बनो
- 68 अधर-अधर पर
- 69 कठिनतम प्रश्न इतने ढेर से
- 70 आज तुम हमें मिले
- 71 आंदोलित है जीवन

सृष्टि सतरंगी हुई है	72	104	कोई ऐसा गीत लिखा होता
अब कोई परवाह नहीं है	73	105	कोई भी नहीं हो अकेला
जीवन मधुमय हो जाता है	74	106	नये अनुभव होने लगे हैं
हनुमान जी में	75	107	बिन तुम्हारे जिंदगी
हो असीम हो अनंत	77	108	क्या कर लेंगे कल
देह नीलिमामय थी	78	109	कभी-कभी धरती पर
साहब इतनी दया करो	80	110	चंदन तन नीम हो गया है
आज के समाज का	81	111	ऐसे गीत सुनाते जायें
चूनर उड़े यान हो जाये	82	112	राजहंस की छवि देते हैं
एक नाम दे दो जीवन को	83	113	असमतल जिंदगी अपनी
तुमको आना एक दिन है	84	114	कभी मिले अवसर
हो गया मन	85	115	प्यार को यदि सागर माने
हिन्दी भाषा अमर रहेगी	86	117	काश कि तुमने देखा होता
आशाओं ने नमस्कार की	87	118	हम तो बस अपनी लीक चले
कर रहे हम आज शर-संधान	88	119	जीवन है वह नदी
आज भी मन परेशान है	89	120	ऐसे मत मिलना
कुछ असंभव नहीं है	90	121	आप की जहाँ पहुँच नहीं
पग जैसे हो गये	91	122	जल विहीन सरितायें हैं
युवा चेतनाओं	92	123	सपने भी भगीरथ हो गये हैं
धार लेना इस हृदय में	93	124	लुटा-लुटा कर मन की निधियाँ
अपने से करते संग्राम है	95	125	करो उपकार जगत का
पंथ नया फोड़ दो	96	126	नियमों की मानें या ऋतु की
नदी जल विहीना	97	127	क्या पता कब
गीतों के सावन बरसेंगे	98	128	विनय यही है
जिंदगी में गीत सी गम्भीरता	99	129	तुम जो साथ हो
बनाते रहे लोग सौ सौ बहाने	100	130	भूल नहीं पाता हूँ
जाने कैसा एकाकीपन	102	131	यही देती हैं जीवन दान
मानव में सद्गुण भी	103		

प्रोफे. सोम ठाकुर की कलम से...

'भूमिका'

डा. अजय 'प्रसून' की नवीन गीत-कृति 'कालजयी हम प्यास लिये' की पाण्डुलिपि मेरे हाथों में है। इस कृति पर विचार करने से पूर्व हमें गीत काव्य की पूर्व पीठिका पर विचार करना अति आवश्यक है।

'लिरिक' के तत्व-बोध के लिए निर्मित आधुनिक शब्द, जिसका मूलभूत में इसके प्रयोग मिलते हैं...गीतं शब्दाति गान यो: (हेमचन्द्र) और 'गीतं गानामिये समे' (अमरकोश, 1-6-26), गीत काव्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **लोचन प्रसाद पाण्डेय** ने **'कविता-कुसुम-माला'** (प्रथम संस्करण, जून 1909) की भूमिका में किया और 'पाठकों से एक निवेदन' के अन्तर्गत लिखा कि काव्य के तीन प्रकार हैं... गीतिकाव्य, श्रव्य-काव्य और दृष्यकाव्य। गीतिकाव्य गीत शैली का नव्यतम विकास है। गीत और गीतिकाव्य का विकास लोकगीतों से ही हुआ है।

काव्य सृजन में आज दो दिशा दिशाएँ दृष्टिगोचर होती हैं । एक परम्परा और दूसरी प्रयोग की दिशा । पारम्परिक सृजन से आम आदमी के संस्कार पहले से ही जुड़े होते हैं । प्रयोग की स्थिति में कथ्य और अभिव्यक्ति में नवीन भाव-भूमि और अभिव्यक्ति का नया माध्यम होने के कारण सहज सम्प्रेषण में कठिनाई होती है । केवल नवगीत सृजन ने संस्कारों को जीवित रखा है और अपनी बिम्बधर्मिता के कारण जन सामान्य के कल्पना पटल को समृद्ध किया है ।

डा. अजय 'प्रसून' ने संवेदन के सभी आयामों को छूने का प्रयत्न किया है किन्तु उनके गीतों का मूल भाव प्रेम है...

"न तुम हो सामने तो गीत रसना गा नहीं सकती,
नदी की धार कूलों को छुए बिन जा नहीं सकती।
तुम्हारी याद आती है तो संयम तोड़ देती है,

किसी एकांत घाटी से नदी को जोड़ देती है।
अधर पर एक मधुरिम प्यास लाकर छोड़ देती है ।
न तुम हो सामने तो चैन काया पा नहीं सकती,
हवा डोले तो क्या फूलों का मन महका नहीं सकती।''

उपर्युक्त काव्यांश की पहली दो पक्तियाँ में अंग्रेजी का पोयेटिक काज (Poetic Cause) अलंकार का प्रयोग हुआ है। इस अलंकार के अन्तर्गत स्वाभाविक प्रक्रिया में रचनाकार किसी तर्क संगत कारण को आरोपित करता है।

डॉ. अजय प्रसून ने निम्न पक्तियों में संघर्ष के सकारात्मक पक्ष को आलोकित करने का सफल प्रयास किया है।...

"आंधियों तूफान झंझावात के मारे नहीं हैं,
हम अभी हारे नहीं हैं, हम अभी हारे नहीं हैं।''

कवि ने कहीं-कहीं आध्यात्मिक जीवन मूल्यों की रक्षा की है। चिकित्सा विज्ञान के वैज्ञानिक होने के नाते उन्होंने परा शक्ति को नकारा नहीं है। ....

"धरती के कण कण में अविनाशी तत्व है,
काया तो मरती है जीवन मरता नहीं हैं।''

उपर्युक्त पंक्तियों में गीता का उपदेश निहित है। डॉ. अजय का मानना है कि पीड़ा और अभाव की अनुभूति हमारी आत्म-शक्ति का हरण करती है, ...

"दर्द की ऋचाएँ ये, प्यास की कथायें ये,
लूटती है आत्म कोष की असीम सम्पदा,
एक आँख सरयू है, एक आँख नर्मदा,
आप से मिलन हो नहीं सका, जन्म-जन्म से सो नहीं सका।''

उपर्युक्त पंक्तियों की यह विशेषता है कि कवि ने पवित्र उपकरणों का अभिव्यक्ति हेतु चयन किया है । जहाँ एक ओर रचनाकार राग-भाव से जुड़ा है, वहीं अपने राष्ट्र के प्रति दायित्व को भी पूरा प्रश्रय देता है।...

"रौशनी की बात हो, रश्मि हो प्रभात हो,
जागरण के गीत हर अधर पे होने चाहिये।
प्रेम-बीज मानव के मन में बोने चाहिये,
राष्ट्रगान को मिल के गाइये, राष्ट्र की ध्वजा को फहराइये।''

डॉ. अजय प्रसून ने वर्णित नायिका के मन और सम्पूर्ण व्यक्तित्व में मार्दव और शौर्य की परिकल्पना की है....

"हाथों में अनंत कोष मन में भरपूर जोश,
एक नई चेतना छिपी है, रंगों में कहीं,
इनमें जितना प्यार, उतना प्यार है कहीं नहीं,
होलिका दिखे रंग-रंग में, छन्द नव लिखे अंग-अंग में।''

सत्य के पक्ष में रचनाकार ने किसी भी जिज्ञासा को परितुष्ट करने के तर्क प्रस्तुत किये हैं।....

"आत्मा के स्वर्ग में खिलता हुआ,
आँसुओं के नीर में मिलता हुआ,
जिंदगी का सच कभी हारा नही,
क्योंकि सच है, रेत की धारा नहीं।''

"सच कभी बँधता नहीं सीमाओं में, डगमगाता है नहीं विपदाओं में,
टूट सकता है नहीं ये काँच सा, बह नहीं सकता कभी धाराओं में।
घाटिओं के बीच में गाता हुआ, चाबुकें सदभाव की खाता हुआ,
आदमी का सच कभी हारा नहीं, क्योंकि सच टूटा हुआ तारा नहीं।''

डॉ. अजय प्रसून के गीतों में आध्यात्मिक दार्शनिकता बार-बार व्यक्त होती है–

"तन की लकड़ी उतनी सुलगी,
जितनी सुलगी लकड़ी मन की।
क्योंकि देह का और हृदय का,
कुछ ऐसा संयोग बना है ।

अगर देह जल गई चिता में,
तय है मन को भी जलना है ।
इसीलिए जग की हाटों में,
पूछ न कोई अपनेपन की।''

आज का मनुष्य अन्तरिक्ष की यात्रा कर रहा है, किंतु वह दूसरे मानव तक जाने में असमर्थ है। इसी विषम परिस्थिति को निम्न पक्तियों में व्यक्त किया है।...

"प्रीति वाले भवन तक गये, रूप के मधु सपन तक गये,
हम प्रकृति में गये हर कहीं, बस तुम्हारे न मन तक गये ।''

सौन्दर्य-बोध रचनाकार के भाव-मण्डल का महत्वपूर्ण तत्व है । यह यत्र-तत्र सर्वत्र परिलक्षित होता है...

"देह सुघर लावण्य रूप सब पाई हो ,
तरूण नयन में भरे सिंधु गहराई हो ।
श्यामल-श्यामल तन जैसे मलयानिल हो,
यह तरूणाई कहो कहाँ से लाई हो।''

"पर्वत से झरते झरनों की चंचलता ,
साँसों में संयम का मृगछौना पलता ।
धार बाँध कर बहती नदिया की गति हो,
तुम तो तुम हो नहीं विधाता की कृति हो ।
कभी बनोगी मेरी अभी पराई हो।''

रचनाकार का ऋतु-प्रसंग से गहरा नाता है। निसर्ग के मनोरम आयामों के चित्रित करने का सफल प्रयास है....

"जब आते हैं दिन प्रसंग बसंत के।
दृश्य बदलते दिग-दिगंत के।।
भर जाती कलियों, पुष्पों से
वसुधा की ममतामय बाँहें।

खुल जाती है मानव मन की,
बंद पड़ी सपनीली राहें ।
पल पतझर के सुखद अंत के,
जब आते हैं दिन बसंत के।''

पिछले पाँच दशकों के रचना संसार में महानगर-संत्रास पर बहुत कुछ लिखा गया है। पहले पहल ये संवेदन अमरीका जैसे उन्नत देशों के साहित्य में ही पाया जाता था, किंतु बाद में एशियायी साहित्य भी इसके संवेदन से जुड़ गया। डॉ. अजय प्रसून ने महानगरीय संत्रास पर भी बड़े कौशल से प्रकाश डाला है...

"कहने को अपना घर, दावानल सा जलता, बेचारा महानगर।
कोलाहल और बढ़ा, हलचल का दौर बढ़ा।
अपवादों के माथे, सोने का मौर चढ़ा।
कुछ और सवाल उठे, कुछ मौन हुए उत्तर।
वरदान बने झूठें, दिन लगते हैं जूठे,
टूटी तलवारों की, पकड़े टूटी मूठें,
इस पर भी जीने के, पा जाते हैं अवसर।''

भारत आस्था का देश है। चाहे जिस वर्ग का व्यक्ति हो वह हृदय में ईश्वर के प्रति पूजा-भाव को पल्लवित करता रहता है। डॉ. अजय प्रसून ने राम के प्रति अपने मन की भावनाओं को निम्न पक्तियों में अभिव्यक्ति प्रदान की है....

"अधर-अधर पर गूँज रहा है,
राम तुम्हारा नाम।
जल में राम तुम्हीं हो मेरे थल में राम तुम्हीं,
धरती माँ के लहराते आँचल में राम तुम्हीं।
राम-राम की रट सुनता हूँ,
सुबह सुनूँ या शाम।''

राग-द्वेष से परिपूर्ण संसार में प्रेम की स्थापना बहुत आवश्यक है, क्योंकि अंत में मानव को प्रेम के मंदिर में ही शरण लेनी पड़ेगी, यही संकल्प निम्न पक्तियों में व्यक्त हुआ है....

"प्रीति के कुसुम खिले, आज हमें तुम मिले,
आज हुई पूर्ण जिंदगी की पूर्ण कामना।
आज मिल के हम करेंगे प्रेम-सृष्टि सर्जना,
चाहता है तन-तन को बाँधना, किन्तु करे मन, मन की साधना।''

नव वर्ष के आगमन पर प्राय: हर्ष की अनुभूति होती है, किन्तु अद्यतन परिस्थितियों में सारा वातावरण विषाक्त लगने लगा है, हर व्यक्ति इस अघोषित विपदा से भयभीत है, इसी आशय को कवि ने निम्न पक्तियों में स्वर दिया है....

"अक्षर-अक्षर ज्वालामय आतंकित हर साया,
आन्दोलित है जीवन, कैसा नया वर्ष आया।
साँसों में आक्रोश, नयन में भरी उदासी है,
हर मानव की हर मानस की गंगा प्यासी है।
ऐसा लगता जैसे कोई अनहोनी होगी,
इसी प्रश्न में उलझा-उलझा अंतर भरमाया।''

जलती हुई होली की लपटों में लाल, पीला, केसरिया आदि सभी रंग भावक्ता के अनेक आयामों की यात्रा करते है, कवि चाहता है वह सारी रंगमयता सहचरी के व्यक्तित्व में समाहित हो जाये और कवि स्वयं मनोज की मानसिकता को ग्रहण करके जीवन के भोग का अनुभव करे.....

"होलिका की अग्नि वाले रंग मन में धार लें,
रति बनो तुम हम मदन का रूप लें आकार लें।

भारतीय मानस में देवी-देवताओं हेतु सदा पूज्य भाव रहता है। डॉ. अजय प्रसून ने निम्न पक्तियों में आञ्जनेय का पावन स्मरण किया है....

"वंदनीय जिन्हे तीनों लोकों ने बताया है,
हनुमान जी में प्रभु राम जी की छाया है।

जिन के विशाल वक्ष में विराजमान हैं,
श्री राम-जानकी, वही तो हनुमान हैं।
जिनका मधुर रूप आत्मा को भाया है ,
हनुमान जी में प्रभु राम जी की छाया है।''

"छीनो मत नौकरी, भले तुम सौ इल्जाम धरो,
साहब इतनी दया करो।
यही नौकरी मेरे भूखे बच्चों का संबल है ,
टूटे सपनो की पूंजी है, पत्नी का संबल है,
मेरे जीवन की झोली में कुछ वरदान भरो।
साहब! इतनी दया करो।

उपर्युक्त पक्तियों में एक कर्मचारी द्वारा अपने उच्च अधिकारी से दया की प्रार्थना की गयी। जहाँ तक मेरी जानकारी है इस विषय पर यह सम्भवत: हिन्दी की प्रथम रचना है।

डॉ. अजय प्रसून के गीतों की भाषा न कठिन है और न सरल, वरन वह सहज अर्थात भाव के साथ जन्मी भाषा है। भाषा का यही रूप अपेक्षित है।

मेरा विश्वास है कि डॉ. अजय प्रसून प्रणीत इस संग्रह का साहित्य के मंदिर में समुचित स्वागत होगा । मेरी कोटिश: शुभकामनाएँ ।

प्रोफेसर सोम ठाकुर
श्री कृष्ण जन्माष्टमी 2016 **प्राक्तन कार्यकारी उपाध्यक्ष**
उ०प्र० हिन्दी संस्थान
लखनऊ (उ०प्र०)

26/73, अहीर पाड़ा, राजा की मण्डी, आगरा-282002 (भारत),
मोबा. 09412255604, 09411963666

समीक्षा-स्वर

● **डॉ. राहुल मिश्र, प्राध्यापक, केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह, लद्दाख (जम्मू व कश्मीर)**

डॉ. अजय प्रसून के अनागत गीत-संग्रह 'कालजयी हम प्यास लिये' हेतु वाग्देवी के आशीष और असीम अनुकंपा से आलोकित शब्दशिल्पी डॉ. अजय प्रसून किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। उनके काव्य-संसार में जितनी विविधता है, उतनी ही वैचारिक गंभीरता भी है। जीवन के अनागत पक्ष को उकेरने वाली उनकी शब्द-साधना विलक्षण है।

अगर किसी से पूछा जाय कि आप जी कैसे रहे हैं ? गरीबी, बेकारी, अशिक्षा, शोषण-अन्याय-अत्याचार, अपराध, भ्रष्टाचार और ऐसी ही तमाम दयनीय और दु:खद स्थितियाँ आपके चारो ओर हैं। ऐसी स्थितियाँ केवल उपस्थित ही नहीं हैं, वरन अपनी उपस्थिति का शिद्दत से अहसास भी कराती हैं। आप दैनिक जीवन में, रोजमर्रा के कार्य-व्यवहार में इन स्थितियों से, या फिर इन स्थितियों के कारण उपजने वाले प्रभावों से अपने को अलग नहीं रख पाते हैं। गरीब तो गरीब ही है, अमीर भी धन से अपने जीवन में खुशियाँ नहीं ला पाता है । नतीजतन नीरस और उबाऊ जीवन ही हिस्से में रह जाता है। आपका जीवन नीरस और उबाऊ है, मगर आप हैं कि जीना चाहते हैं। आखिर आप जीते कैसे हैं ? आप जीवन जी कैसे रहे हैं ?

यह सवाल ऐसा है कि इसका उत्तर खोजना बहुत कठिन हो जाएगा। फिर भी कुछ लोग उत्तर दे सकते हैं। कुछ लोग कहेंगे हम अध्यात्म के सहारे, योग-प्राणायाम के सहारे जी रहे हैं । कुछ लोग कहेंगे कि हमें भक्ति का सहारा है। कुछ लोग कहेंगे कि हम दूसरों को खुशी बाँटते हैं और उसके सहारे ही जी लेते हैं। ऐसे ही तमाम उत्तर लोगों से मिल सकते हैं। ऐसे कई उत्तर हो सकते हैं जो रंग-रोगन करके सुंदर शब्दों द्वारा सजाए गए बाह्य-पक्ष

को प्रकट कर सकते हैं। हम अंतस की गहराइयों में उतरकर कभी देखें, तब पता चलेगा कि हमारे जीते रहने का कारण कुछ और ही है और वह है आने वाले सुख की कल्पना। वह सुख जीवन में कभी आए या न आए, मगर उसके आने का इंतजार कठिन-जटिल वर्तमान को जीने की ताकत दे देता है। काल के प्रवाह में जीवन के निरंतर गतिमान रहने की सामर्थ्य इसी अवधारणा पर केंद्रित है। जीवन के यथार्थ से जुड़ने के अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए साहित्य इस अवधारणा को प्रकट भी करता है।

डॉ. अजय प्रसून की अनागत की कल्पना इसी का एक अंग है। 'कठिन वर्तमान को जीते-भोगते हुए सुखद स्वर्णिम भविष्य की कल्पना की 'थीम' साहित्य को सीधे जीवन के मर्म के साथ जोड़ती है। जीवन के साथ साहित्य के इस नैसर्गिक जुड़ाव को शब्दबद्ध करते हुए डॉ. अजय प्रसून ने जिस 'अनागत कविता' के अलम को स्थापित किया, आज वह साहित्याकाश में अपनी नवीन उपस्थिति से नवीन आयाम सृजित कर रही है। कहना ना होगा कि 'अनागत कविता' ने कहानी और उपन्यास विधाओं को भी प्रभावित किया है और आज की हिन्दी कहानी में, हिन्दी उपन्यासों में अनागत की 'थीम' को देखा जा सकता है ।

डॉ. अजय प्रसून की इस कृति में अनागत गीतों का संकलन है। गीतों का सर्जन आज के जटिल जीवन में कठिन सा हो गया है। उस पर यथार्थ की अभिव्यक्ति के लिए गीतों का लिखा जाना कठिनतम कार्य है। डॉ. अजय ने इस चुनौती को स्वीकार किया है। वस्तुत: अनागत की थीम के दूसरे हिस्से, अर्थात सुखद-स्वर्णिम भविष्य की कल्पना को गीतों में ही बेहतर तरीके से उकेरा जा सकता है। वे गीत ही तो है, जिनके होने से खुश और सुखी होने को प्रकट किया जा सकता है। इन अर्थों में डॉ. अजय प्रसून की यह कृति महत्वपूर्ण है। एक ओर यथार्थ का क्रूर-जटिल-कठिन और सुलगता हुआ चित्रण और दूसरी ओर गीतों के मृदुल आरोह-अवरोह में शीतल झोंकों की तरह आकर्षित कर लेने वाली कोमल-सुखद कल्पना

दो विरोधी रंगों में रंगकर डॉ. अजय प्रसून ने इस गीत-संग्रह को मूर्त रूप दिया है।

अनागत गीतो के इस अद्‌भुत-अनूठे संग्रह के माध्यम से डॉ. अजय प्रसून ने हिन्दी काव्य-जगत को न केवल समृद्ध किया है वरन उनका यह प्रयास नवीन आयामों और नूतन चिंतनधाराओं को गति देने वाला है।''

● **श्री ओम नीरव अध्यक्ष** 'कवितालोक' लखनऊ

कालजयी गीतों का संग्रह : 'कालजयी हम प्यास लिये'

हिन्दी कविता के संसार में डॉ. अजय प्रसून जी का नाम एक सिद्ध गीतकार एवं अनागत कविता के प्रणेता के रूप में सदैव ही आदर के साथ लिया जाता रहा है। कठिन वर्तमान में जीते हुए स्वर्णिम भविष्य की कल्पना ही अनागत कविता का मूल आधार है। आपके इस काव्य-दर्शन को रूपायित करने वाले अनागत गीतों, अनागत गजलों और अनागत मुक्तछंद रचनाओं के अनेक संयुक्त संकलन और एकल संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें आपकी अपनी कृतियां अनागत काव्य-संग्रह 'बांसुरी की भीतरी तह में', अनागत गीत संग्रह 'दर्पण शिला लेख हो जाये' और 'महानगर के गीत' मुख्य हैं। अनागत कविता के सम्मान में रूद्र नाथ पाण्डेय, शिव शंकर मिश्र, डॉ. रोहिताश्व अस्थाना आदि अनेक साहित्यकारों के आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। एक लम्बे अंतराल के बाद अब आपके कालजयी गीतों का संग्रह **'कालजयी हम प्यास लिये'** प्रकाशित होने जा रहा है, यह जानकर मुझे अतीव प्रसन्नता हुई है।

मैं कोई चार दशक पूर्व से प्रसून जी के गीतों का प्रशंसक रहा हूँ। नवल-नवल प्रतीक बिंबों के माध्यम से अपने संवेदनशील ह्रदय की अनुभूतियों को पाठक के ह्रदय में उतार देने की विलक्षण क्षमता आप की लेखनी में है जो आपके गीतों को सहज संवेद्य एवं प्रभविष्णु बनाती है। छंदों और मापनियों पर आधारित आपके गीत गेयता की कसौटी पर खरे

उतरते हैं और इसीलिए काव्य मंचो पर सदैव उन्मुक्त सराहना प्राप्त करते रहे हैं। आपके लगभग सभी गीतों में जो बात मुझे विशेष रेखाकंनीय लगी है वह यह कि गीत का मुखड़ा उसकी पूरी भावभूमि के लिए एक सम्मोहक भूमिका का सृजन करता है और आगे के अंतरे उसी भावभूमि के परित: इस प्रकार चक्रण करते हैं कि प्रत्येक अंतरे की प्रारम्भिक पक्तियां में लक्ष्य का संधान होता है और पूरक पंक्ति में लक्ष्य पर सीधे प्रहार होता है, जो पाठक-श्रोता को अनायास 'वाह' करने पर विवश कर देता है। आपके गीतों में व्यक्ति और समाज की विद्रूपता को एक ऐसी व्यापक दृष्टि और सकारात्मक सोच के साथ प्रस्तुत किया गया है कि गीत के कलेवर में 'सत्यं शिवं सुंदरम' स्वत: साकार हो उठा है। संभवत: यही आपके अनागत-दर्शन की उपादेयता भी है। यदि प्रतीकों की नव्यता, बिम्ब विधान की यथार्थता और कथ्य की समसामयिकता को देखा जाये तो 'नव' और 'गीत' दोनो तत्वों को समाहित करने वाले आपके गीत नवगीत की कसौटी पर खरे उतरते हैं। व्यष्टि में समष्टि और अणु में विभु को साकार करने वाले आपके ऐसे ही भावप्रवण मनोहारी गीतो का संग्रह है– 'कालजयी हम प्यास लिये'।

मुझे विश्वास है कि यह काव्यकृति सामाजिकों के लिए रसानंदवर्धक, समीक्षकों के लिए स्नेह-भाजक एवं नवांकुरों के लिए दिशाबोधक सिद्ध होगी तथा हिन्दी साहित्य में विशिष्ट सम्मान की पात्र बनेगी। कृति और कृतिकार दोनो के लिए मेरी अशेष शुभकामनाएँ।

● **दिनेश सोनी** आलोक नगर, लखनऊ

कालजयी गीतों का संग्रह : 'कालजयी हम प्यास लिये'

अनागत कविता आन्दोलन के सूत्रधार डॉ० अजय कुमार द्विवेदी जी 'प्रसून' बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सरल, सहज व सहृदय कवि हैं। मुख्यत: गीत, गज़ल व छन्दों पर आपने साधिकार लेखनी चलायी है। गीतों में प्राय:

सभी भावभूमि पर कवि ने लिखा है। प्रकाशित गीत संग्रह **'कालजयी हम प्यास लिये'** निश्चित रूप से हिन्दी की गीत विधा में अपना स्थान बनायेगा।

डॉ. प्रसून जी को जहाँ तक मैं जानता हूँ वह कवि तो अच्छे हैं ही व्यक्तिगत रूप से वे विशेष व्यक्तित्व वाले हैं। सहज ही देखकर उनके बारे में जानना सम्भव नही है। उनका सान्निध्य होने पर धीरे-धीरे उन्हें समझा जा सकता है। वे स्वतः प्रत्येक बार अलग स्वरूप में देखने को मिलते हैं।

डॉ. प्रसून जी की साहित्य साधना दीर्घकालिक है। बीच के अन्तराल को वे अपनी कर्मठता से पूर्ण करना चाहते हैं। प्रस्तुत गीत संग्रह **'कालजयी हम प्यास लिये'** उसी दिशा में एक सफलतम प्रयास है। मैं तो केवल यही शुभाशा रखता हूँ कि डॉ. साहब की लेखनी से इसी तरह काव्य संग्रह निकलकर वाग्देवी के भण्डार की वृद्धिश्री करते रहें। पुनश्च साधुवाद।

1. अनवरत लेखनी चले सदा, गीतों छन्दों में भाव स्रजन।
   खिलता ही रहे प्रसून सदृश, वह भव्य अनागत का चिन्तन।

2. होय अनागत का अभियान बहे कविता स्वर छंदन में।
   गीत, सवैया, कवित्त, सुकाव्य रचें कवि मातु के वंदन में।
   आपस में न रहे मतभेद रूचैं रति प्रेम के बंधन में।
   शारदा होंय सहाय दिनों दिन शीश झुकै अभि नंदन में।।

- **आदित्य चतुर्वेदी** सर्वोदयनगर, लखनऊ
  कालजयी गीतों का संग्रह : 'कालजयी हम प्यास लिये'

अनागत आन्दोलन के जनक डॉ. अजय प्रसून, उ.प्र. के स्वनाम धन्य गीतों के एक ऐसे राजकुमार हैं जो आशा की नैया पर सवार होकर

निराशा के बड़े-बड़े भवसागर पार किये। कुशल शिल्पी प्रेम-भावनाओं के सतर्क चितेरे, शब्दों को उंगलियों पर नचाने वाले डॉ. अजय प्रसून की प्रस्तुत गीत-संकलन **'कालजयी हम प्यास लिये'** इन्हीं भावों का महकता गुलदस्ता है जिससे हिन्दी काव्य-जगत सुशोधित होकर महाकाव्यमान है।

काव्य और शिल्प की कसौटियों पर सोलह आने खरे यह गीत संकलन का हिन्दी काव्य-जगत अपना स्नेह/आशीर्वचन देकर अपनायेगा ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

अपने अग्रज को मंगलकामना के साथ बधाई देता हूँ ताकि भविष्य में नव प्रसूता की तरह नित्य नव सृजन करते हुये हिन्दी साहित्य को समृद्ध करते रहेगें।

- **प्रवीण कुमार शुक्ला 'गोबर गणेश'** अलीगंज, लखनऊ
  कालजयी गीतों का संग्रह : 'कालजयी हम प्यास लिये'

गीतकार डॉ. अजय प्रसून जी के बारे में अधिक कहना रवि-शशि को दीपक दिखाने जैसी बात है। आपकी साहित्यिक निष्ठा और प्रतिष्ठा दोनों को मैं प्रणाम करता हूँ। आपके गीत संकलन **'कालजयी हम प्यास लिये'** में तीखे तेवर नये कलेवर में बिलकुल पेवर देशी घी की तरह समाज के सामने आ रहे है और आगे भी आते रहेंगे। ऐसा मेरा विश्वास है। वर्तमान समय में-

अनागत खुशी सौ गुनी लेके आये।
प्रसून जी में रस फागुनी लेके आये।
गीत का संकलन प्रीत जोड़े सभी से
खुशी से हवा गुनगुनी लेके आये।
मेरी कामना श्री गणेश जी से गोबर
कोई तो नई रोशनी लेके आये।

● **शरद कुमार पाण्डेय 'शशांक'**

उप-सम्पादक, राष्ट्रीय स्वरूप, दैनिक पत्र, लखनऊ

कालजयी गीतों का संग्रह : 'कालजयी हम प्यास लिये'

गीत, गजलों के बेताज बादशाह डॉ. अजय प्रसून एक प्रतिष्ठित कवि-साहित्यकार हैं। हिन्दी काव्य जगत में आपने बड़ी ख्याति अर्जित की है। त्रैमासिक पत्रिका ताम्रपर्णी के सम्पादक से लेकर कवि तक का आपका साहित्यिक सफर काफी चुनौतियों भरा रहा है। लेख, समीक्षा, गीत, गजल व छन्दों में आपने साधिकार लेखनी चलाई है। आपकी कई कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है और अनेक काव्य कृतियाँ अप्रकाशित हैं। आपको काव्य गोष्ठियों और राष्ट्रीय मंचों पर बड़े-बड़े काव्य मनीषियों के साथ काव्य पाठ करने का सौभाग्य मिला है।

अनागत के प्रस्तावक के रूप में आजकल आपने काव्य जगत में धूम मचा रखी है। हिन्दी काव्य जगत को आपसे बड़ी आशाएं हैं। आपकी शीघ्र प्रकाशित काव्यकृति **'कालजयी हम प्यास लिये'** में मौलिकता के साथ-साथ नवीनता के दर्शन होते हैं। भाषा, भाव व शिल्प की दृष्टि से आपकी इस अनूठी कृति का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ और कविता की भाषा में कहना चाहता हूँ :-

स्वागत तुम्हारा है, अनागत तुम्हारा है

हारा नहीं जीवन में काव्य को संवारा सदा
किंचित डिगा नहीं अडिग ध्रुवतारा है।
भ्रष्ट राजनीति व अनीतियों से दूर रह
गीत व गजल की बधाई रस धारा है।
छोड़ मदमोह, द्रोह बढ़ते रहे सुपंथ
प्रेम से माँ भारती की आरती उतारा है।
कल था तुम्हारा और आज भी तुम्हारा यहाँ
स्वागत तुम्हारा है, अनागत तुम्हारा है।।

अपनी बात

आज का समाज अनेकानेक समस्याओं से जूझता हुआ वर्तमान की त्रासदी और अतीत की कडुवाहट को आत्मसात करता हुआ आगे बढ़ा चला जा रहा है । इसलिए आज के समस्त रचनाकारों का यह परम दायित्व बनता है कि वे इस समाज को नये सिरे से सजाने सँवारने का गुरूतर दायित्व ग्रहण कर इसकी आत्मिक पीड़ा को दूर करने में सहायक बनें, ताकि समाज को पुनर्जीवन प्राप्त हो सके और उसे उसकी मूल धारा में वापस लाया जा सके। इन्हीं भावनाओं को आत्मसात कर मैंने अपने नवीनतम अनागत काव्य-संग्रह 'कालजयी हम प्यास लिये' को समाज के सामने प्रस्तुत करने का निर्णय लिया है।

मैंने अनागत कविता आंदोलन की शुरूआत काफी समय पूर्व की थी, जिसमें तत्कालीन समय के अनेक साहित्यकार कवि आत्मिक रूप से जुड़े और इस आंदोलन को दिशा प्रदान की। कई नवीन एवं सिद्धहस्त रचनाकारों ने इस आंदोलन को गति प्रदान करते हुए अपनी काव्य-कृतियाँ समर्पित की और आंदोलन को मजबूत किया। इन रचनाकारों में डॉ. कुसुम शाह, श्री शरद समर्थ, कु. आरती अर्पिता, मयंक किशोर शुक्ल 'मयंक', डॉ. कृष्ण कुमार 'चंचल', श्री कुमार विजयी एवं श्री राम देव लाल विभोर जी आदि प्रमुख हैं। मेरे अपने कई काव्य-संग्रह भी इस आंदोलन को आगे बढ़ाते हुए मेरे संपादन में और भी कई अनागत काव्य-संग्रह रचनाकारों के सहयोग से प्रकाशित हुए हैं। श्री गौरी शंकर मिश्र एवं श्री राजेंद्र कृष्ण श्रीवास्तव जी द्वारा 'उ.प्र. मजदूर दर्पण एवं साहित्य प्रोत्साहन' के अनागत कविता विशेषांक भी प्रकाशित हुए। विभिन्न स्थानों पर अनागत काव्य गोष्ठियाँ एवं अनागत काव्य समारोह आयोजित होते रहे हैं और हो रहे हैं।

इधर कुछ समय पूर्व अनागत कविता आंदोलन को गति प्रदान करने के उद्देश्य से अनागत काव्य गोष्ठियों की मासिक श्रृखंला मेरे द्वारा शुरू की गई है जिसे अनेकानेक रचनाकारों ने अपना अप्रतिम योगदान दिया है, जिनमें सर्वश्री ओम नीरव जी, मधुकर अस्थाना जी, डॉ. राम सजीवन शुक्ल जी, ओम प्रकाश मिश्र 'प्रकाश' जी, डा. सुभाष गुरुदेव जी, भ्रमर बैसवारी जी, अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' जी, मनमोहन बाराकोटी जी, हरीश लोहुमी जी, राहुल द्विवेदी 'स्मित' जी, डॉ. मनोज अग्रवाल जी, उमाकांत पाण्डेय जी, राम राय राणा जी, केवल कुमार सत्यम जी, नरेंद्र भूषण जी, माधव बाजपेयी जी, डॉ. रंग नाथ मिश्र 'सत्य' जी, राम कुमार सरोज जी, राम राज भारती जी, मुकेश कुमार मिश्र जी, हरि प्रकाश 'हरि' जी, विपिन मलिहाबादी जी, सिद्धेश्वर शुक्ल क्रांति जी, मंजुल मंजर जी, मिजाज लखनवी जी, आदि मनीषी कवि शामिल हैं। इन कवियों ने अपनी उपस्थिति एवं समर्थन द्वारा इस अनागत कविता आंदोलन को प्रचुर गति प्रदान की है एवं उसके मार्ग को प्रशस्त किया है।

प्रस्तुत अनागत गीत सग्रह 'कालजयी हम प्यास लिये' प्रकाशित रूप में आप सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। यह मुख्यतः श्रृंगार भावनाओं में रचा बसा काव्य-संग्रह है, जिनमें विभिन्न मनः स्थितियों में इन गीतों का सृजन हुआ है साथ ही कई अन्य गीत भी इसमें संकलित किये गये हैं। यदि इन गीतों ने पाठकों के ह्रदय में अपना स्थान बनाया तो मैं अपने श्रम को सफल समझूँगा।

अंत में मैं आदरणीय श्री सोम ठाकुर जी के प्रति कृतज्ञता अर्पित करता हूँ जिन्होंने इस कृति की भूमिका लिखकर कृति को पूर्णता प्रदान की, साथ ही श्री ओम नीरव जी, डा. राहुल मिश्र जी, श्री आदित्य

चतुर्वेदी जी, श्री दिनेश सोनी जी, श्री शरद पाण्डेय 'शशांक' जी, श्री प्रवीन कुमार शुक्ल 'गोबर गणेश जी' एवं श्री संजय सागर जी का ह्रदय से आभारी हूँ जिन्होने अपने विचार देकर मेरा उत्साहवर्धन किया।

डॉ. अजय 'प्रसून'

अध्यक्ष-अखिल भारतीय अनागत साहित्य संस्थान

माँ वैभव लक्ष्मी होम्यो क्लीनिक

538/II 318, योगी नगर, त्रिवेणी नगर-III, सीतापुर रोड,

लखनऊ-226020

मो. 9305107455

प्रार्थना यही है मातु शारदे

प्यार दे दुलार दे गलतियाँ सुधार दे,
साँस-साँस महमहाये ऐसी मधु बयार दे।
सारा शब्दकोष आत्मकक्ष में उतार दे।
प्रार्थना यही है मातु शारदे नेक हम बने मन उदार दे।।

तू जो चाहे हमको भी सुयश मिले त्रिलोक में,
एक सम रहे हमेशा हर्ष में या शोक में।
हम करेंगे मन से मातु तेरी साधना सदा,
अपनी स्नेह डोर से हमें तू बाँधना सदा।
जिंदगी का सार दे जान्हवी की धार दे,
ऐसी कर कृपा कि सारे दूर कर विकार दे।।

तेरे मार्ग पर पड़े हैं पग तो धन्य धन्य हैं,
हम तो भक्तिलीन तेरे भक्त हम अनन्य है।
अपने आप पर न हमको गर्व है न ग्लानि है,
दूर तुझसे यदि हुए तो ये विराट हानि है।
दुर्गुणों को मार दे कल्पना सँवार दे,
दृष्टि डाल काव्य-भावनाओं को निखार दे।

आने वाला सामने अनागतीय सत्य है,
क्रूर काल अट्टहास करके करता नृत्य है।
चल रहा है एक युद्ध आज अपने आप से,
बाज आ रहा न कोई व्यर्थ के प्रलाप से।
जीत दे या हार दे धैर्य का सितार दे,
पूर्व सोंचों की नदी से तू हमें उबार दे।

गीत रसना गा नहीं सकती

न तुम हो सामने तो गीत रसना गा नहीं सकती,
नदी की धार कूलों को छुये बिन जा नहीं सकती।

तुम्हारी याद आती है तो संयम तोड़ देती है,
किसी एकांत घाटी से नदी को जोड़ देती है।
अधर पर एक मधुरिम प्यास लाकर छोड़ देती है।
न तुम हो सामने तो चैन काया पा नहीं सकती,
हवा डोले तो क्या फूलों का मन महका नहीं सकती।

तुम्हे जब सोचता तो एक दर्पण सा चटक जाता,
बड़ी आसान सी जीवन की राहों में भटक जाता ।
तुम्हे ही आत्मा में देखता बस एकटक जाता ।
न तुम हो सामने तो तृप्ति हम तक आ नहीं सकती,
नयन की कोर खारे अश्रु तक छलका नहीं सकती।

तुम्हारे बिन भला क्या सृष्टि का सौन्दर्य भायेगा,
जो मन कुछ गुनगुनाएगा तुम्ही को गुनगुनाएगा।
तुम्हारे साथ बीता जो भी पल वो याद आयेगा।
न तुम हो सामने तो कल्पना रंग ला नहीं सकती,
क्षितिज के पार धरती व्योम को तरसा नहीं सकती।

न तुम हो तो हमारी कामना को पर नहीं लगते,
निकलते स्वर जो होठों से हमारे स्वर नहीं लगते।
जिसे हम प्यार कहते ढ़ाई वो अक्षर नहीं लगते ।
न तुम हो सामने तो कोई भी शय भा नहीं सकती,
जिसे हम दृष्टि कहते हैं वो सच झुठला नहीं सकती।

अगर तुम चाह जाओगे

अगर तुम चाह जाओगे तो क्या हम हार पायेंगे,
ये जीवन का सफर भी चुटकियों में जीत लायेंगे।।

हमारी आँख में छवि जो भी अंकित है तुम्हारी है,
सुलगती साँस में खुशबू जो संचित है तुम्हारी है।
हृदय की भावना जो प्रभु समर्पित है तुम्हारी है।
अगर तुम चाह जाओगे तो क्या हम लड़खड़ायेंगे।
शिखर पर थे शिखर तक ही पुनः हम दौड़ जायेंगे।।

हुई रसहीन सी ये जिंदगी है रस नहीं बाकी,
अभी तो एक पग ही चल सकें साहस नहीं बाकी।
कभी यशवान थे, गुमनाम हैं अब यश नहीं बाकी।
अगर तुम चाह जाओगे तो क्या हम दुख उठायेंगे।
सुखों के मानसर में नित्य ही गोते लगायेंगे।।

हमें फिर से उठाकर पूर्ववत तुमको ही करना है,
तुम्हारे मार्ग की माटी को छूकर ही सँवरना है।
क्षितिज पर एक सूरज की तरह फिर से उभरना है।
अगर तुम चाह जाओगे नई गंगा बहायेंगे।
नहीं तो स्वप्न की जलती चिता पर लेट जायेंगे।।

हुए हम लक्ष्य से ही भ्रस्ट तुमने फेर ली आँखे,
किसी अभिशाप की छायायें ढ़ोते ही ढ़ली आँखे।
तुम्हारी सुधि लिये होती गई हैं साँवली आँखे।
अगर तुम चाह जाओगे तो हम फिर गुनगुनायेंगे।
तुम्हारे रूप को मधु शब्द पुष्पों से सजायेंगे।।

हम अभी हारे नहीं हैं

आँधियों-तूफान-झंझावात के मारे नहीं हैं,
हम अभी हारे नहीं हैं हम अभी हारे नहीं है।

जीतना अपनी नियति है पाँव में पवनो की गति है,
लक्ष्य पर दिखती प्रगति है किन्तु की सपनों ने अति है।
है तभी विश्वास बरसाती-नदी धारे नहीं है।
हम अभी हारे नहीं हैं।।

सोचते वे हैं थके हम पंथ को अब भी तके हम,
दोष जग भर के ढ़के हम पर कभी क्या रूक सके हम।
काल के आगे कदम टूटे हुए तारे नहीं हैं।
हम अभी हारे नहीं हैं।।

जायेंगें सच है वहाँ तक है क्षितिज सीमा जहाँ तक,
इस धरा से आसमाँ तक और क्या कह दें कहाँ तक।
हम सुनिर्मल जान्हवी जल सिंधु से खारे नहीं है।
हम अभी हारे नहीं हैं।।

गुरू हमें सद्ज्ञान देते प्रभु हमें पहचान देते,
हम सभी पर जान देते सब हमें सम्मान देते।
पृष्ठ हम इतिहास के हैं व्यर्थ के नारे नहीं हैं।
हम अभी हारे नहीं हैं।।

हम तो ऐसे मछेरे रहे

हम तो ऐसे मछेरे रहे मछलियों को निहारा नहीं,
चीरती जल को आई उन्हे रोक पाई वो धारा नहीं।

जाल को फेंकना व्यर्थ था वो तो सीधे हृदय में गई,
हो गई दूर हर रिक्तता एक धुन एक लय में गई।
हर लहर मार्ग से हट गई हर रूकावट स्वयं छँट गई,
हो पराजित न पाई कोई एक निश्चित समय में गई।
वो सहारा हमें दे गई हमने माँगा सहारा नहीं।।

मीन की आस किसको नहीं बूँद भर प्यास किसको नहीं,
चाहिये पूर्ति इच्छाओं की मुक्त आकाश किसको नहीं।
किसको भाती नहीं कामना हो भले अग्नि का सामना,
मोहे किसको नहीं मधु सपन मुक्त मधुमास किसको नहीं।
इसलिए मन की वो कर सकी हमने मन को तो मारा नहीं।।

हमने भी आत्मा खोल दी वस्तु कोई तो आनमोल दी,
उनके सम्मुख हर एक सम्पदा मुफ्त में पल में ही तोल दी।
हो न पाई कोई प्रतिक्रिया हमने खुलकर समय को जिया,
जितना भी पास ऐश्वर्य था उसकी थैली स्वयं खोल दी।
उसने लूटी प्रचुर सम्पदा अन्य कोई था चारा नहीं।।

जीवन मरता नहीं

धरती के कण-कण में अविनाशी तत्व है,
काया तो मरती है जीवन मरता नहीं।

वेद की ऋचाओं में अभिमंत्रित शब्द है,
जैविकीय औषधियाँ भी तो उपलब्ध है।
सम्मुख ही मानव के उसका प्रारब्ध है,
देख-देख हर कोई इसको स्तब्ध है।
विधि के विधान का भी अपना महत्व है,
कलियाँ तो मरती हैं मधुवन मरता नहीं।

ऋषियों के वचनों से मानवता जन्म ले,
कामना यही सबकी दुनिया फूले फले।
बसी हुई है जाने कब से अंबर तले,
रजनी जब आ जायें तब ही संध्या ढ़ले।
सच है इस सृष्टि बीच जीता पुरूषत्व है,
बूँदें तो मरती हैं सावन मरता नहीं।

मोघ या अमोघ हो भले ही तीर छूटता,
पाप का घड़ा भी तो भरकर ही फूटता।
आत्मिक हैं भावनायें कोई उन्हें लूटता,
अपना ही वक्षस्थल हर कोई कूटता।
यूँ ही नहीं पाता हर कोई अमरत्व है,
मृगतृष्णा मरती है दर्शन मरता नहीं।

जन्म-जन्म से सो नहीं सका

दर्द की ऋचायें ये प्यास की कथायें ये,
लूटती है आत्मकोष की असीम संपदा;
एक आँख सरयू है एक आँख नर्मदा;
आपसे मिलन हो नहीं सका, जन्म-जन्म से सो नहीं सका ।

गोवर्धन प्राण हुए और मन अरावली,
साँस-साँस मीरा बन गाती है बावली।
दो ही शब्द बोलिये, प्रीति-सुधा घोलिये,
अंतरात्मा की भीतरी सतह की है सदा।
आप मेरी जिन्दगी की जान्हवी प्रियंवदा।।

सप्त सागरों जैसी भावना हिलोर ले,
उन्चासों पवनों की शक्तियाँ बटोर ले।
इसलिये कि खिल सके आप हमें मिल सकें,
शीश पर कठोर क्रूर कालचक्र है लदा।
होना है वो ही जो भाग्य लेख में बदा।।

एक हाथ चन्द्र और एक हाथ सूर्य है,
माथे पर स्यामंतक सी मणि वैदूर्य है।
हमको नहीं चाहिये भावना जगाइये,
सुधियों में आपका ही ध्यान रहा सर्वदा।
पंक्ति पंक्ति को प्रेरित करती है वागदा।।

पल-पल ही छू जाती पीड़ा की पांखुरी,
राधा को टेरती है कान्हा की बाँसुरी।
बेचौनी घोर है रात्रि है कि भोर है,
घिर आई जाने ये कैसी है आपदा।
हमसे भी मिलने आ जाइये यदा-कदा।।

ज्वाला मुख जीवन की प्यास है अवन्तिका,
पोर-पोर अंतरघट प्यासी है द्वारिका।
पास कभी आइये ये तृषा बुझाइये,
हो जाये जिन्दगी हमारी शुभ्र फलप्रदा।
हमको मिलवा दें मातु विंध्य अंबु शारदा।

मन की भावना नहीं चुरा सकी

एक और पाँखुरी गुलाब की,
मन की भावना नहीं चुरा सकी।
ला सकी न द्वार तक प्रसून के प्रिये,
पाँखुरी बिना प्रसून किस तरह जिये।

क्या बताऊँ खोजने कहाँ-कहाँ गई,
क्षीर के अनाम ताल में नहा गई।
पाँखुरी वही जो स्वप्न महमहा गई,
खो गई है प्यास की गहन व्यथा लिये।

एक पंक्ति आगत के आगमन की है,
एक बूँद मधु ऋतु के आचमन की है।
पाँखुरी नहीं वो प्रीति अपने मन की है,
खो गई जो रोशनी के खींच हाशिये।

नींद से अवाक हो जगी भी ये नहीं,
गीत या कि छन्द की सगी भी ये नहीं।
पाँखुरी नहीं तो जिंदगी भी ये नहीं,
खो गई पता नहीं कहाँ तपन पिये।

रोशनी की बात हो

रोशनी की बात हो रश्मि हो प्रभात हो,
जागरण के गीत हर अधर पे होने चाहिये।
प्रेम बीज मानव के मन में बोने चाहिये।
राष्ट्र-गान को मिल के गाइये, राष्ट्र की ध्वजा को फहराइये।।

वर्षगाँठ है पचासवीं स्वतंत्र देश की,
अब न कोई बात होगी दुःख और क्लेश की।
शब्द शब्द प्रीति हो पावन तम नीति हो,
भारती की दृष्टि में सपन सलोने चाहिये।

खेत वन शिखर नदी पवन हृदय को मोहते,
सूर्य और चन्द्रमा की नित्य राह जोहते।
साँस-साँस कर्म हो मानवता धर्म हो,
एकता के भाव व्यक्ति के न सोने चाहिये।

जिसमें पूर्ण हो सभी के मन की सर्वकामना,
हम बनायें ऐसी एक भारतीय भावना।
जिसमें मन का भाव हो स्नेह हो लगाव हो,
ऐसी ही सुधियों के पल सँजोने चाहिये।

ऊँच और नीच का न कोई भी सवाल हो,
चेतना से युक्त आदमी न अब निढ़ाल हो।
दंभ का विनाश हो ज्योति हो प्रकाश हो,
अब न दीन के नयन हमें भिगोने चाहिये।

अब न देर कीजिये

आपने हमें छुआ और फिर यही हुआ,
नैन हुए कावेरी देह ज्वाल श्रंग है।
पंच पुष्प बाण फेंकने लगा अनंग है,
टीसने लगा अंग अंग है, काम की प्रिया संग संग है।

रूप सिंधु आपका वो ज्वार ले के आ गया,
आत्मा पे स्वर्ण धूलि के समान छा गया।
हम हैं प्रणय-कांक्षी अंतरिक्ष साक्षी,
जिसको छू रही ये कामनाओं की पतंग है।
भागने लगा दिशा-दिशा में मन तुरंग है।।

यह मिलन प्रकृति पुरूष का है संयोग ही नहीं,
इसकी मूल भावना में मात्र भोग ही नहीं।
हम है स्नेह-प्रार्थी मौन दर्शनार्थी,
डोलता कली-कली पे श्यामवर्ण भ्रंग है।
एक साँस यमुना तो एक साँस गंग है।।

अब न देर कीजिये कि धैर्य है विकल बड़ा,
मर्माहत पूर्व स्वप्न आँख से निकल पड़ा।
हम हैं प्रीति-यात्री आप प्रेम दात्री,
सृष्टि हुई आंदोलित हाथों में चंग है।
शंख बजे मानस के बज उठा मृदंग है।।

अब हमारे बीच मेघदूत का न काम है,
अब हमारी जिंदगी ये आप ही के नाम है ।
आप दग्ध सोम सी मुक्त आपकी हँसी,
अंतर की घाटियों में अनकही उमंग है।
घुल रहा शिरा शिरा में आपका ही रंग है।।

छंद नव लिखे अंग-अंग में

हाथों में अनंत कोष मन में भरपूर जोश,
एक नई चेतना छिपी है रंगो में कहीं ।
इनमें जितना प्यार उतना प्यार है कहीं नहीं,
होलिका दिखे रंग-रंग में, छंद नव लिखे अंग-अंग में।

हर कोई अपनी मस्तियों में डूबा जा रहा,
एक लहर खुशियों की हृदयों में ला रहा।
गा रहा है गीत नये, बन रहें हैं मीत नये,
जीवन है और कहाँ जीवन तो है यहीं।

हर तरफ अबीर है गुलाल है धमाल है,
मौसम के हाथों में रंगों का रूमाल है।
जाग रही कामना होगी मुखर कल्पना,
प्रेमियों ने प्रेमिकाओं की हथेलियाँ गहीं।

आज दुःख-शोक व्यक्ति के न पास रह सके,
आवश्यक है न कोई भी उदास रह सके।
आई पावन घड़ी रंगी की फुलझड़ी,
दूर-दूर तक होते सुख के संवाद ही।

सच टूटा हुआ तारा नहीं

आत्मा के स्वर्ग में खिलता हुआ, आँसुओं के नीर में मिलता हुआ,
जिंदगी का सच कभी हारा नहीं, क्योंकि सच है रेत की धारा नहीं।

सच कभी बँधता नहीं सीमाओं में, डगमगाता है नहीं विपदाओं में,
टूट सकता है नहीं ये काँच सा, बह नहीं सकता कभी धाराओं में।
घाटियों के बीच में गाता हुआ, चाबुकें सदभाव की खाता हुआ,
आदमी का सच कभी हारा नहीं, क्योंकि सच टूटा हुआ तारा नहीं।

सच वही है दिख रहा जो आज है, ये समय के दर्द की आवाज है,
कौन इसके सामने टिक पायेगा, तेवरों वाला लिये अंदाज है।
झील के जल की तरह गहरा हुआ, आँधियों के वक्ष पे ठहरा हुआ,
रोशनी का सच कभी हारा नहीं, क्योंकि सच है सिंधु सा खारा नहीं।

सच कहीं सुंदर कहीं विद्रूप है, ये कहीं ज्वालामुखी का रूप है,
ये कहीं तीखा लगे विष की तरह, सोचिये तो एक अंधा कूप है।
तीव्र जन आक्रोश का पुतला हुआ, भीड़ के पाँवों तले कुचला हुआ,
त्रासदी का सच कभी हारा नहीं, क्योंकि सच है झूठ की कारा नहीं।

सच कभी गाँधी कभी ईसा बना, आग में पिघला हुआ शीशा बना,
एक विधवा की कराहों की तरह, ये किसी घनघोर रजनी सा बना।
शासकों की सूलियाँ चढ़ता हुआ, काल के भी भाल को पढ़ता हुआ,
बेबसी का सच कभी हारा नहीं, क्योंकि सच ने झूठ स्वीकारा नहीं।

जो उदासी भर गई

तुम हमारी जिंदगी की प्रेरणा,
कवि ह्रदय की एक अनुपम कल्पना।
तुम मिलो तो पग थके गतिमय बने,
गीत में साकार होगी भावना।

देह को छू जाय जैसे रश्मियाँ,
तुम मिलो ऐसे कि जैसे बदलियाँ।
चल रहा जीवन से जो संघर्ष है,
जीत लेगें एक दिन हम शर्तियाँ।
जीत लेगें हम प्रलय गतिमान को,
जीत लेगें हम समय बलवान को।
तुम मिलो तो जिंदगी की लय बने,
हम दिखा देगें दुखों को आईना।

जो उदासी भर गई नयनों में है,
जो उदासी भर गई सपनों में है।
एक खालीपन जो साँसों भरा,
बढ़ गई जो दूरियाँ अपनो में है।
तुम मिलो तो फिर नया सूरज उगे,
तुम मिलो तो फिर नया जादू जगे।
तुम मिलो तो जिंदगी सुखमय बने,
जो कि भर देगी नसों में चेतना।

बीते कल के दर्पणों को तोड़कर,
सारे नाते सारे रिश्ते छोड़कर।
बिन तुम्हारे कोई भी दिखता नहीं,
आज हम आकर खड़े उस मोड़ पर।
तुम अगर चाहो तो कुछ तुमसे कहें,
तुम अगर चाहो तो हम जिंदा रहें।
तुम मिलो तो जिंदगी अक्षय बने,
एक चुटकी तुम अगर दो साँत्वना।

एक समय ऐसा भी आता

तन की लकड़ी उतनी सुलगी,
जितनी सुलगी लकड़ी मन की।

क्योंकि देह का और हृदय का,
कुछ ऐसा संयोग बना है।
अगर देह जल गई चिता में,
तय है मन को भी जलना है।
इसीलिए जग की हाटों में,
पूछ न कोई अपनेपन की।

यह ऐसा रहस्य है जिसमें,
हर मानव बस उलझा ही है ।
जो सुलझा ले गया उसी की,
हम कहते कि वाहवाही है ।
वरना क्या विश्वास किसी का,
झूठ बोलती छवि दर्पण की ।

एक समय ऐसा भी आता,
जब कि राख दोनो हो जाते।
उड़ जाते हैं बीच गगन में,
आँखे मूँद कहीं सो जाते ।
व्याख्या करनी बड़ी कठिन है,
सच ही है जीवन-दर्शन की ।

जितनी खुशियाँ पास थीं

अनब्याहे सपनों वाली एक सुबह क्रय कर लाओ,
किरणों वाली हाट से फिर गुजरेगी ठाट से।

जीवन की पगडंडियाँ जलते जंगल को गई,
जितनी खुशियाँ पास थीं वे औरों की हो गई।
वे खुशियाँ लेकर आओ थोड़ा सा जल भर लाओ,
नदियों के उस घाट से फिर गुजरेगी ठाट से।

ऐसा है वातावरण पल-पल रूकती साँस है,
जितनी प्यासी भूमि है उतना ही आकाश है।
इन्हे मिला दो सागर से अमृतवाली गागर से,
लहरों के सम्राट से फिर गुजरेगी ठाट से।

जगती थकती भावना उसकी है परछाईयाँ,
डुबो रही इच्छाओं को मन की ही गहराईयाँ।
इसकी भी कुछ दवा करो गर्म बहुत है हवा करो,
पानी चुये ललाट से फिर गुजरेगी ठाट से।

बस तुम्हारे न मन तक गये

प्रीतिवाले भवन तक गये, रूप के मधु सपन तक गये,
हम प्रकृति में गये हर कहीं, बस तुम्हारे न मन तक गये।

हम न तुम से कभी हो सके, मरू में सपने नहीं बो सके,
कल्प बीते हैं अब तक कई, एक पल को नहीं सो सके।
अग्नियों के शयन तक गये, सिंधु के आचमन तक गये,
रिद्धियाँ-सिद्धियाँ साथ थी, मंदिरों में भजन तक गये।

तुमको ही देखते रह गये, दर्द के ही पते रह गये,
सर्दियाँ थी मगर दूर से, हाथ ही सेकते रह गये।
गीत के शांत वन तक गये, दृष्टि के आकलन तक गये,
भावों की संतुलित सृष्टि हो, उसके भी संतुलन तक गये।

लक्ष्य पर पग नहीं धर सके, जिसको चाहा नहीं वर सके,
जो कमी जिंदगी में रही, दूर उसको नहीं कर सके।
साधना से सृजन तक गये, सर्जना से शयन तक गये,
बस न पहुँचे तुम्हीं तक कभी, वैसे तो हम गगन तक गये।

संध्या के ढ़लते सूरज सी

देह सुघर लावण्य रूप सब पाई हो,
तरूण नयन में भरे सिंधु-गहराई हो।
श्यामल-श्यामल तन जैसे मलयानिल हो,
यह तरूणाई कहो कहाँ से लाई हो।

पर्वत से झरते झरनों सी चंचलता,
साँसों में संयम का मृगछौना पलता।
धार बाँधकर बहती नदिया की गति हो,
तुम तो तुम हो नहीं विधाता की कृति हो।
कभी बनोगी मेरी अभी पराई हो।।

अंग-अंग जैसे शाश्वत रस का प्याला,
देखे छोड़े योगी योग पुजारी माला।
तपसी तप त्यागे जप करना छोड़े,
तुम्हे देखकर मुँह कोई कैसे मोड़े।
ऐसा यौवन भार स्वयं गरूआई हो।।

अधर-अधर हैं नहीं छन्द हैं दोहे हैं,
ये ऐसे जो मन्मथ का मन मोहे हैं।
अंग-अंग है मेघराग में रचा बसा,
रेशम से भी कोमल है कमनीय त्वचा,
गीत रागिनी प्रणयातुर शहनाई हो।।

संध्या के ढ़लते सूरज सी सौम्य लगी,
प्रातः की उजली किरणों के साथ जगीं।
रजनी वाली मुग्ध चाँदनी की छाया,
छू भर लो हो जायेगी कंचन काया।
तुम्ही कामना की सुंदर अमराई हो।।

आ जाओ जीवन में ठंडे झोकों सी,
खुशियाँ मिल जायेगीं तीनो लोकों की।
तुम्हे नहीं मालूम कि हो क्या मेरे लिये,
मिल जाओ तो अँधियारे में जलें दिये।
तुम ही मन-मस्तिष्क बुद्धि पर छाई हो।।

जब आते हैं दिन बसंत के

जब आते हैं दिन बसंत के।
दृश्य बदलते दिग्दिंगत के।।

भर जाती कलियों पुष्पों से,
वसुधा की ममतामय बाँहें।
खुल जाती हैं मानव मन की,
बंद पड़ी सपनीली राहें।
पल होते पतझर के अंत के,
जब आते हैं दिन बसंत के।

दिशा-दिशा में भीनी-भीनी,
महक हवाओं में भर जाती।
तन-मन उत्साहित हो जाते,
जैसे जादू सा कर जाती।
दर्शन हो जाते अनंत के,
जब आते है दिन बसंत के।

पिछली सारी कड़ुवी यादें,
मिट जातीं मधुमय बातों में।
रिश्तों की हरियाली भरकर,
अपनापन भरती रातों में।
गोरी जाये पास कंत के,
जब आते हैं दिन बसंत के।

एक मधुर मुस्कान घोलकर

आते हो संजीवन देने, जाते समय मरण दे जाते,
जन्मों-जन्मों भूल न पायें, ऐसे संस्मरण दे जाते।
गीतों का यदि सृजन करें तो, उनके प्रथम चरण दे जाते,
एक मधुर मुस्कान घोलकर, शत शत अलंकरण दे जाते।

शब्द-शब्द में निहित अर्थ भर, कल्पनाओं को पंख लगा के,
भावनाओं में हस्तक्षेप कर, कामनाओं का भाग्य जगा के।
वय की इस संध्या बेला में, प्रातः जैसे क्षण दे जाते,
चलें तुम्हारे ही पथ पर हम, वो अंधानुकरण दे जाते।

सूरज की जो प्रथम किरण हो, उसका तेज लिये हो मुख पे,
सुख अनुभूति करा के हमको, अंकुश कर जाते हर दुख पे ।
जूही के गुलाब गेंदे के, सुंदर आभूषण दे जाते,
प्रीति-पत्रिका कभी रची जो, उसके संस्करण दे जाते।

मन के मंदिर की मूरत हो, नहीं तुम्हारी तुलना कोई,
अगर न तुम सम्मुख होते हो, सुधियों में आँखे हैं रोई।
आत्मा की धरती को जैसे, नभ गंगावतरण दे जाते,
शरणागत को जैसे मिलती प्रभु से वही शरण दे जाते।

चंदन में आग वो लगा दी

तुमने फिर प्यास वो जगा दी,
सागर में खलबली मचा दी।
तिल-तिल कर काया जलती,
चंदन में आग वो लगा दी।

पहले जो खींची रेखायें,
पुनः वही खींच कर गये हो।
फिर वो ही फसलें लहराई,
जिनको तुम सींच कर गये हो ।
भला-भला लगता है सब कुछ,
ऐसी अनुभूति को हवा दी।

जाग्रत हो सपने सारे,
नव उड़ान भरने की सोचें।
विगत-पुष्प हाथों में लेकर,
सुधियों की पंखुरियाँ नोचें।
लहर-लहर उल्लासित लगती,
तुमने रसधार वो बहा दी।

कल को अब होगा जो भी,
किंतु आज मन की कर लें।
आसमान विस्तृत हो कितना,
उसको हम अँजुरी में भर लें।
रख दें उस पंथ पर चरण हम,
जिसने ये दूरियाँ मिटा दी ।

मंदिरों के द्वार पर झुकते हुए

गीत वाली बाँसुरी भाती नहीं,
प्रीति वाली रागिनी गाती नहीं।
बस हमें भाता मनों को तोड़ना,
मृत हुई आत्माओं को झिंझोड़ना।

चाहते हम नोच डाले पंख वे,
यह पवन जिन पर बहुत इतरा रही।
चाहते हम तोड़ डाले शंख वे,
यह अगम जलराशि जिनको भा रही।
जागते सोते हुए मरते हुए,
देखते हम सृष्टि को डरते हुए।
भावना के दर्पणों को तोड़ना,
बस हमें भाता निशायें ओढ़ना।

कौन समझेगा हमें इस हाल में,
जब कि हम हैं लक्ष्य से भटके हुए।
पर्वतों की आखिरी जो चोटियाँ,
उनमें से ही एक पर अटके हुए।
भागते चलते हुए रूकते हुए,
मंदिरों के द्वार पर झुकते हुए।
श्वाँसवाली हिम-शिलायें तोड़ना,
प्रस्तरों पर शीश प्रतिपल फोड़ना।

जब भी कोई दर्पण चटका

जाने कितने अनुबंधों से,
बँधा हुआ है जीवन सारा।

क्योंकि मोह की चूनर ओढ़े,
मायावी छलना इस मन को।
जाने कहाँ उड़ा ले जाती,
अपनेपन के श्वेत वसन को।
जिन पर लगे हुए हैं छीटें,
लाल रक्त के देख दुबारा।

एक नहीं दो नहीं शताधिक,
आते विघ्न लक्ष्य पाने में।
किंतु मनुज लड़ता रहता है,
उससे जाने अनजाने में।
इसीलिए पतझड़ से लड़ता,
रहता है मधुमास बेचारा।

जब भी कोई दर्पण चटका,
टीस हृदय में उठी हमेशा।
मजबूरी का लाभ उठाना,
बना लिया लोगों ने पेशा।
इसी तरह से सदियाँ बीती,
बहती रहा समय की धारा।

यह अनुबंध मनुजता के हैं

कुछ शर्तें जीवन की ऐसी,
जो पूरी करनी पड़ती हैं।

अगर किसी पर कर्ज किसी का,
पड़ा हुआ पिछले जीवन का।
इतना तय है भरना होगा,
चाहे सौदा हो तन-मन का।
मजबूरियाँ भले कैसी हों,
तलवे में कीले जड़ती हैं।

बचकर निकल भागना चाहें,
ऐसी कोई राह नही है।
यह अनुबंध मनुजता के हैं,
जिनकी कोई थाह नहीं है।
यह ऐसी हैं कलियाँ काँटो,
से भी जो बढ़कर गड़ती हैं।

एक स्वप्न है एक गीत है,
एक प्यार की गजल जिंदगी।
इतनी सरल नहीं है जितनी,
समझे हो तुम सरल जिंदगी।
यह ऐसी हैं नदियाँ जो,
अपने ही कूलों से लड़ती हैं।

होनी तो होकर रहती है

होनी तो होकर रहती है
सच है बात तुम्हारी लेकिन,
अनहोनी भी हो जाती है
कभी-कभी अपने जीवन में।

झूठे सारे जग के वादे
झूठा हर दर्पण का चेहरा,
अक्सर झूठी तारीफों का
लोग पहन लेते है सेहरा।
झूठे दिन हैं झूठी रातें,
झूठी इस मौसम की बातें,
झूठा होगा वह जल भी जो
बरसेगा अबकी सावन में।

कभी-कभी ऐसा भी होता
मन मे भर जाता दावानल,
देह सुलगने लगती जलने
लगता हैं सपनों का आँचल।
जल जाती कलियाँ मधुऋतु की
जल जाते है पत्र नवोदित।
राजहंस झीलों से उड़कर
दूर कहीं बसते निर्जन में।

हवा मकानों में जब आती

मन की भावना गीतों का धन
पाकर ऐसे खो दे,
जैसे कोई अपना ही प्रिय
हँसते हँसते रो दे।

मानवता की आँखों में ऐसे भी सपने आये,
किसी प्रौढ़ के चंगुल में ज्यों नवयुवती फँस जाये।
थमते थमते सभी सिलसिले
कुछ ऐसे थमते हैं,
प्रौढ़ कोख में उस बेबस के
बीज पाप का बो दे।

हवा मकानों में जब आती कुछ ऐसे आती है,
दावानल को छूकर जैसे हर शय जल जाती है।
कभी कभी तो यही हवा
ऐसा जादू करती है,
प्राणों की बंजर धरती को
जैसे मेघ भिगो दे।

मौसम और हवा का ऐसा बंधन है नाता है,
सागर हर नदिया को ज्यों अपना बतलाता है।
इस बंधन में कभी कभी
ऐसी गाँठे पड़ती हैं ।
मालिन ज्यों गुलाब की माला
में कंडैल पिरो दे।

कहने को अपना घर

कहने को अपना घर,
दावानल सा जलता
बेचारा महानगर।

कोलाहल और बढ़ा,
हलचल का दौर बढ़ा।
अपवादों के माथे
सोने का मौर चढ़ा।
कुछ और सवाल उठे,
कुछ मौन हुए उत्तर।

वरदान बने झूठे,
दिन लगते हैं जूठे।
टूटी तलवारों की,
पकड़े टूटी मूठें।
इस पर भी जीने के
पा जाते है अवसर।

अपने से ही उखड़े,
क्यों भींच रहे जबड़े।
साँसों में गड़ते हैं
मन दर्पण के टुकड़े।
इसलिए चलो बैठें,
मौसम के कंधो पर।

भीग-भीग जाती पलकों की कोर

एक अजानी सी व्याकुलता देकर चले गये,
तुम अपने थे हम अपनों के द्वारा छले गये।
नहीं समझ पाता अब हमको कौन सँभालेगा,
कौन हमारे सपनों को अपनों सा पालेगा।।

संत्रासों से भरी जिंदगी पहले से ही थी,
उस पर तुमने जन्मों की ये बेचैनी भर दी।
दर्दनाक हर घटनाक्रम है पार न पायेंगे,
नहीं जानता कौन हमें अब देखेगा भालेगा।।

वातावरण बनाकर तुमने ऐसा छोड़ दिया,
त्रासदियों से दिशाहीन जीवन को जोड़ दिया।
हम अनगढ़ी मूर्तियों जैसे प्रस्तर राहों के,
कौन हमें अपने-पन के साँचों में ढ़ालेगा।।

आनेवाला कल भी हमको चाहे ठुकरा दे,
जैसे तुमने छला नियति वैसे ही बहला दे।
हम न अलग कर पायेंगे तुमको मन-प्राणों से,
आज हमारा अंतर सारा जहर पचा लेगा।।

भीग-भीग जाती पलकों की कोर न जाने क्यों,
जाता मन बस मीत तुम्हारी ओर न जाने क्यों।
ताकि सनद रह जाये तुमने चोटें ऐसी दी,
अवसर पाकर समय जख्म सारे भर डालेगा।।

हम न रहेगें किंतु हमारे गीत यहीं होंगे,
कालजयी हम प्यास लिये अभिनीत यहीं होंगे।
छोड़ यहीं जायेंगे अक्षर-अक्षर प्रीति भरे,
कभी हमारा नाम शून्य में समय उछालेगा।।

देह को कंचन कर देगा

झीना-झीना आँचल सिर पे मुख पे यौवन धूप,
गुलमोहर सी रंगत खिलती कलियों जैसा रूप।
मेरी साँसो को महकाकर चंदन कर देगा,
मेरे प्रीतिभरे मानस को दर्पण कर देगा,
देह को कंचन कर देगा।।....

भाग्य जगानेवाली कोपल सी हथेलियाँ हैं,
ये दो आँखे नहीं अनबुझी दो पहेलियाँ हैं।
आज लगे जैसे कि तुम्हारा मीत कुआँरापन,
मेरे शांत हृदय-मानस का मंथन कर देगा।
देह को कंचन कर देगा।।....

अमृत भरे ये अधर तुम्हारे अगर मुझे छू लें,
मधुरिम कामनाओं के झूले में जन्मों झूलें।
फूटे पोर-पोर से कोपल ऐसा लगता है,
यह चिंतन ही मेरा जीवन दर्शन कर देगा।
देह को कंचन कर देगा।।....

त्रासदियाँ ढ़ोते-ढ़ोते थक गई जिंदगानी,
मगर न तुमने एक बार भी बात मेरी मानी।
आज मुझे आलिंगन में भर लो वरना मौसम,
जन्म-जन्म की प्यास अग्नि को अर्पण कर देगा।
देह को कंचनकर देगा।।....

जिसमें तैरी ये सदी है दोस्तों

जाने कब से चल रहा क्रम सृष्टि का,
सूर्य मुख सी अग्नि वाली वृष्टि का।
दर्द की गहरी नदी है दोस्तों,
जिसमें तैरी ये सदी है दोस्तों।

आँसुओं के दौर चलने दीजिये,
ये तमाशे और चलने दीजिये।
आदमी की है भला औकात क्या,
वक्त है सिरमौर चलने दीजिये।
हो गई हर साँस बेकाबू तो क्या,
रोशनी की आँख में आँसू तो क्या।
ये नियति की त्रासदी है दोस्तों,
वस्त्रहीना द्रौपदी है दोस्तों।

जिस तरह जी पायें जीते जाइये,
ये लहू के घट भी पीते जाइये।
धैर्य की छाती फटी ही जा रही,
रश्मियों से आप सीते जाइये।
एक दिन अपना कभी तो आयेगा,
कुछ उम्मीदें भेंट में दे जायेगा।
जिसने हमको आस दी है दोस्तों,
उसने ही ये प्यास दी है दोस्तों।

सोचना है आज आखिर क्या करें,
सो गये हैं साज आखिर क्या करें।
गीत हमने वंदना के भी रचे,
देवता नाराज आखिर क्या करें।
गा सको तो आज मिलकर गा भी लो,
साथ में कुछ पा सको तो पा भी लो।
ये समय की चौपदी है दोस्तों,
साथ नेकी के बदी है दोस्तों।

फिर नये सपने जगे हैं

तुम मिले तो फिर नये सपने जगे हैं।
जैसे फूलों से भरे उपवन में कलियों से सजे बिस्तर लगे हैं।

नृत्यरत जैसे मयूरा हो मगन ये,
मन अजानी घाटियों में नाचता है।
प्रीति से परिपूर्ण कृतियाँ जिंदगी की,
व्यग्र हो एकांत क्षण में बाँचता है,
जैसे गीतों से भरे जीवन में कुंकुम से रचे अक्षर लगे हैं।

साधनारत हो तपस्वी जैसे कोई,
आत्मा की वेदिका को पूजता है।
चाहता है देह का कण-कण तुम्ही को,
और अब कुछ भी न हमको सूझता है।
जैसे किरणों से भरे आँगन में अक्षत से सजे तरूवर लगे हैं।

देखना चाहें तुम्हें लोचन सुनयने,
साँस का हर छंद तुमको खोजता है।
डूब जाना चाहता है बस तुम्ही में,
पूछता हर पल तुम्हारा ही पता है।
जैसे बूँदों से भरे सावन में वक्षों से बिंधे मधुशर लगे हैं।

समय को पूजिये

समय बलवान है समय गतिमान है,
समय को पूजिये समय भगवान है।

समय यदि ठीक है तो सब कुछ ठीक है,
समय की लीक से छोटी हर लीक है।
समय प्रतिकूल है तो कंचन धूल है,
समय अनुकूल है तो काँटा फूल है।
समय अभिशाप है समय वरदान है,
समय ही जिंदगी समय श्मशान है।

समय के हाथ में जीवन की रेख है,
समय के भाल पर मानव का लेख है।
समय की आँख में आगत का चित्र है,
समय ही शत्रु है समय ही मित्र है।
समय करता रहा तीखा विषपान है,
समय के वक्ष पर सागर-जलयान है।

समय की सेज पर सोया रजनीश है,
समय के चक्र पर हम सबका शीश है।
समय सतयुग कभी त्रेता-द्वापर बना,
समय कलयुग बना यंत्रों का स्वर बना।
समय अपनत्व की बड़ी पहचान है,
समय को देखकर दुनिया हैरान है।

समय के साथ हम हँस हँस करके जियें,
समय का विष मिले तो शंकर बन पियें।
समय से मिल सके जो भी वो पाईये,
समय के गीत को वंशी पर गाइये।
समय के पाँव के नीचे जहान है,
समय की ठोकरों पर ये इंसान है।

मरू का सागर पचा रही है

एक बूँद तो क्या ये मरू का सागर पचा रही है,
मृगतृष्णा हमको मरूथल में कब से नचा रही है।

मन की सीता स्वर्ण हिरन के पीछे भाग रही है
एक सर्पिणी रूढ़िग्रस्त हो केंचुल त्याग रही है।
भीतर की आदिम इच्छा सोयी थी जाग रही है,
ज्वालामुखी पहनकर खाती-पीती आग रही है।
हमें फेंककर दलदल में वो खुद को बचा रही है।।

सदियों से ये मानव के सपनों की चाह रही है,
किसमें कितनी गहराई ये लेती थाह रही है।
जाने क्या है अंतरात्मा भरती आह रही है,
अधर आस का अमृत पिये हर साँस कराह रही है।
हमें मिटाकर अपने पाँवों म्हावर रचा रही है।।

बुझने वाली प्यास नहीं ये सदियों भटकायेगी,
एक आखिरी हिचकी हमको सब कुछ दे जायेगी।
जो न जिंदगी प्राप्त कर सकी मृत्यु उसे पायेगी,
और बेबसी शाम-सबेरे गीत यही गायेगी।
हमको पंगु बना करके खुद ऊधम मचा रही है।।

प्यार ही यदि खो गया

प्यार ही यदि खो गया संसार से,
हम सभी हो जायेगें लाचार से।
प्यार है तो व्यर्थ हर संग्राम है,
प्यार है तो जिंदगी में राम है।

प्यार का अपना अलग दस्तूर है,
प्यार अपने आप में मजबूर है।
प्यार की अपनी अलग सीमायें है,
प्यार है तो आदमी में नूर है।
प्यार है तो पास में विश्वास है,
प्यार है तो दूर क्या आकाश है।
प्यार है तो अर्थ भी निष्काम है।
प्यार है तो जिंदगी में राम है।।

प्यार को छूना नहीं तलवार से,
प्यार को नहलाओ मधु की धार से।
यदि कभी हम फँस गये मँझधार में,
कम नहीं है प्यार ये पतवार से।
प्यार है तो शूल भी है फूल सा,
प्यार है तो है समय अनुकूल सा।
प्यार है तो क्या सुबह क्या शाम है।
प्यार है तो जिंदगी में राम है।।

प्यार है वह भावना कोई भरे,
प्यार है वह कामना कोई करे।
प्यार है तो गीतमय यह सृष्टि है,
प्यार है वह कल्पना कोई करे।
प्यार का इतिहास पढ़कर देखिये,
प्यार के श्रृंगो पे चढ़कर देखिये।
प्यार की गंगा बही अविराम है।
प्यार है तो जिंदगी में राम है।।

रचवा ली शादी

सत्ता की चालू बिटिया से रचवा ली शादी,
पदलोलुप नेताओं ने पी डाली आजादी।
शीलभंग अपहरण आदि सब इनकी माया है ,
इनके ऊपर तस्कर-सम्राटों की छाया है।
इनकी सुबहें सोना इनकी रातें हैं चाँदी,
इनके आगे बौने दिखते हैं गाँधीवादी।

इनके बलबूते जिंदा है पुलिस और थाने,
बड़े-बड़े दुर्दान्त दस्यु इनकी सलाह मानें।
बेंच दिया ईमान हाट में काली की खादी,
जाने कितना दुख झेलेगी बढ़ती आबादी।
चिपक गये कुर्सी से यों ज्यों तन से बर्रैया,
इन गिद्धों के भय से काँपे जनता गौरैया।
सागर इनको नमन करे नदियाँ इनकी बाँदी,
राजनीति के दादा ये संसद इनकी दादी।

इनके एम.एल.ए., एम.पी कानून इन्हे पूजे,
लाखों की जनता में इनका जयकारा गूँजे।
भैंस के आगे बीन बजा दी भैंस भी पगुरा दी,
सरकारी दर पर अंधों में रेवड़ी बँटवा दी।
लोकतंत्र का कफन लपेटे संविधान रोये,
दंगों वाले बीज विषैले इनके ही बोये।
बाते भूल सभी जाते हैं बेशक बुनियादी,
इसका इनकाऊन्टर उसकी कुड़की करवा दी।

ज्योतिष और ज्योतिषी इनका बड़ा हितैषी है,
इनकी कथनी करनी बिल्कुल इनके जैसी है।

आज यहाँ कल वहाँ डकैती कोई डलवा दी,
आंदोलन करने वालों पर गोली चलवा दी।

राजनीति के बड़े खिलाड़ी माहिर सरकस में,
कैसे कैसे तीर भरे हैं इनके तरकस में।
बात नहीं सुनते जो होते लातों के आदी,
कौन इन्हे समझाये की है कितनी बरबादी।

इनके आगे जो आया वो जला होलिका सा,
व्यर्थ नहीं होगा ये फेंकेंगे जो भी पासा।
इन लोगो ने जला झोपड़ी बिल्डिंग बनवा दी,
अपनी पुख्ता हुई कमर पर नई सदी लादी।

हमारी पलक नहीं झपकी

आज तुम इतने पास रहे,
मगर सदियों लम्बी दूरी।

अधर से अधर नहीं मिल सके मगर साँसे गिन ली हमने,
उजालों ने तड़पाया किंतु मदद की बेचारे तम ने।
बने हम रति के दास रहे,
न जाने क्या थी मजबूरी।

हमारी पलक नहीं झपकी दुखी है पोर पोर मन की,
भावना चूर चूर दर्पण निशा रोयी अपने पन की।
निकट हमसे मधुमास रहे,
हुई पर साध नहीं पूरी।

कामना टूट टूट बरसी गीत विरहानल में डूबे,
शब्द ज्वालामुखियों जैसे राख हैं सारे मंसूबे।
लिये हिरनों की प्यास रहे,
नाभि में लेकर कस्तूरी।

आग की नदी बीच तैरे अंगारों की बारिश झेले,
देह के शिलानगर में हम दहकते लावों से खेले।
पवन बहते उन्चास रहे,
मौसमों की ले मंजूरी।

गीत वन पलाश का हुआ सपन

बोलती दिशायें हैं डोलती हवायें हैं,
बाग बाग में बसंत का हुआ है आगमन,
फूल फूल को प्रणाम शाख शाख को नमन।
मन अमलतास का हुआ सपन, गीत वन पलाश का हुआ सपन।।

महमहा रही समीर व्योम की सुहावनी,
लग रही है आज की उषा बड़ा लुभावनी।
सरसों की बालियां केसर की क्यारियां,
कर रही है मधुऋतु का झूम झूम आचमन।
मन अमलतास का हुआ सपन, गीत वन पलाश का हुआ सपन।।

हर गुलाब एक नई चेतना है बाँटता,
ऋतुपति भी पूछता है व्यक्ति व्यक्ति का पता।
जागें हैं भाव भी आया बदलाव भी,
मौसम के आँगन में लाख लाख हैं सुमन।
मन अमलतास का हुआ सपन, गीत वन पलाश का हुआ सपन।।

जीवन में खुशियों की धूप झिलमिला उठी,
अधरों पर आगत की प्यास खिलखिला उठी।
पंख खोल खग उड़े पग से फिर पग जुड़े,
थके थके राजहंस के खुले हैं फिर नयन।
मन अमलतास का हुआ सपन, गीत वन पलाश का हुआ सपन।।

मधुमास बनो

मधुमास बनो महको मन में,
भर जीवन दो इस जीवन में।

तुम रूप की धूप पिये हुए हो यह बात इशारों से जाँच रही,
इन प्राणों के गीतों की छंदो की पंक्तियों को यह आँखें है बाँच रही।
झरनो के समान बहो खुल के इस देह की माटी की प्यास बुझे,
परिभाषा मिले नई ताजगी को,
जलधारा मिले अपनेपन में।

यह पान का फूल का अंग अनंग बसा जिसकी तरूणाई में है,
अब आ ही गया नया दौर ये स्वप्न की सूनी पड़ी अँगनाई में है।
कलियों के समान खिलो महको थके हारे मुसाफिर के पथ में,
जिससे वह भूल व्यथाये सभी,
पहुँचे निज लक्ष्य निकेतन में।

नथुनी हँस दी पग पायल ने भर पावनता हर साँस में दी,
कचनार सी भोर फँसी उर में बहती ऋतु की सुकुमार नदी।
तन की मरूभूमि है प्यासी इसे तुम प्रीति की बूँदों से सींच ही दो,
अनुभूति मिले नई भावना को,
भरी चेतनता कर कंगन में।

अधर-अधर पर

अधर-अधर पर गूँज रहा है,
राम तुम्हारा नाम।

जल में राम तुम्ही हो मेरे थल में राम तुम्ही,
धरती माँ के लहराते आँचल में राम तुम्ही।
राम-राम की रट सुनता हूँ,
सुबह सुनूँ या शाम।

सुमन-सुमन में राम बसे तुम कली कली में तुम,
हर आँगन में गीत तुम्हारे गली गली में तुम।
ध्यान तुम्ही में रमा हुआ है,
हर पल आठो याम।

मन के बुझते दीप जला दो इतना तो कर दो,
यह समाज दम तोड़ रहा है प्राण नये भर दो।
इतना भी यदि नहीं करोगे,
तो होगे बदनाम।

भरी-भरी आखों से कहता वर्तमान तुम से,
तेज विहीन हुआ मैं कहता अंशुमान तुम से।
स्नेह प्रदान सभी को करना,
राम तुम्हारा काम।

कठिनतम प्रश्न इतने ढ़ेर से

हमारे नाम आस्थावान कुछ पल कर दिये तुमने,
कठिनतम प्रश्न इतने ढ़ेर से हल कर दिये तुमने।

तभी तो हम बड़े निश्चिंत होकर चल पड़े मग में,
नई हैं चेतनाएं दौड़ती नस-नस में रग-रग में।
कहीं कोई कमी हरगिज नहीं है प्यार की जग में।
अहम को तोड़कर मन-प्राण निर्मल कर दिये तुमने।।

हमारी जिंदगी में उठ रहा तूफान जैसा था,
हमारी साँस में जलने लगा श्मशान जैसा था।
समय बीते हुए कल का बड़े व्यवधान जैसा था।
हमारे लड़खड़ाये पाँव संबल कर दिये तुमने।।

हमारे जल रहे मस्तिष्क को जलधार से सींचा,
हमारी भावनाओं को बड़े ही प्यार से सींचा।
फसल जो सोचवाली थी बड़े अधिकार से सींचा।
कड़ी थी धूप सिर पर मौन आँचल कर दिये तुमने।।

आज तुम हमे मिले

प्रीति के कुसुम खिले, आज हमें तुम मिले,
आज हुई पूर्ण जिंदगी की सर्वकामना।
आज मिल के हम करेंगे प्रेम सृष्टि सर्जना,
चाहता है तन तन को बाँधना, किन्तु करे मन मन की साधना।।

आज हमें पल पल ये कंचन से प्राप्त हैं,
दुःख भरे पिछले दिन हो चुके समाप्त हैं।
मिल गई हमें उषा, दूर हो गई निशा,
आज तुमने दे दी है मन को ऐसी सांत्वना।।

आज तो हमें बीते कल पर न कोई क्षोभ है,
मिलना क्या खोना क्या अब न कोई लोभ है।
क्योंकि हाथ हाथ में आप भी हैं साथ में,
अब न हम करेंगे ब्रह्म से भी कोई याचना।।

साँसो में साँसो का अमृत मधु घोलिये,
कानों में पुण्य श्लोक अंतर के बोलिये।
लाज को समेटिये, देह पुष्प भेंटिये,
आज की निकटतायें अंत तक निबाहना।।

आज भले बाँहों को बाँहों का हार दें,
आज भले जीवन भर की थकन उतार दें।
साथ नहीं छोड़िये और मुख न मोड़िये,
आज पूर्ण कीजिये हमारी पूर्व प्रार्थना।।

आंदोलित है जीवन

अक्षर-अक्षर ज्वालामय आतंकित हर साया,
आंदोलित है जीवन कैसा नया वर्ष आया।

साँसों में आक्रोश नयन में भरी उदासी है,
हर मानव की हर मानस की गंगा प्यासी है।
ऐसा लगता जैसे कोई अनहोनी होगी,
इसी प्रश्न में उलझा उलझा अंतर भरमाया।

भावनाओं का कत्ल कदम दर कदम हो रहा है,
कोई इस माटी में विष के बीज बो रहा है।
क्या क्या बतलायें कितना कुछ सहे जिंदगानी,
खुशियों के संग एक गहन चिंतन भी है लाया।

आओ समता के समाज का सृजन करें मिल के,
मुरझाये से सुमन तभी मुस्कायेंगे खिल के।
हमें अनागत ऐसी कोई भेंट मधुर देगा,
दूर विषमता होगी चेतन होगी हर काया।

अभी दुखी अधरों को मोहक शब्द बाँटने हैं,
उगे हुए जो वृक्ष द्वेष के सभी काटने हैं।
शब्द मुखर होने हैं ऐसे प्रीति भरी जिनमें,
क्योंकि प्रकृति ने ऐसे में भी अमृत छलकाया।

सृष्टि सतरंगी हुई है

होलिका की अग्निवाले रंग मन में धार लें,
रति बनो तुम हम मदन का रूप लें आकार लें।

सृष्टि सतरंगी हुई है दृष्टि में उन्माद है,
साँस में ज्वालामुखी है कामना आजाद है।
इसलिए हम सुरमई इस जिंदगी का सार लें।

यह महोत्सव प्रीति का है स्नेह का अनुराग का,
आत्मा की घाटियों में है उजाला फाग का।
अँजुरियों में हम चलो बस ढ़ाई आखर प्यार लें।।

वह गहनतम दुःख भी हमको अब नहीं भरमायेगा,
आज का दिन शुभ अगर कल भी सुहाना आयेगा।
है समय ऐसा कि हर मुश्किल नदी कर पार लें।।

अब कोई परवाह नहीं है

अपने बनकर कितने आये जी भर लूटा हुए पराये,
थोड़ा-थोड़ा करके मेरा रक्त पिया पीकर मुस्काये।

डाल हलक तक उँगली मेरी साँसों को छलनी कर डाला,
फिर उनको सिल्वट पर पीसा सपनों को चलनी कर डाला।
जाने क्या क्या कर गुजरे वो कोई उन्हें जाकर समझाये।।

मेरे जीवन की चाहों को तिल तिल करके नष्ट किया है,
अपने पन की जड़ी सुँघाकर लक्ष्य सहित पथभ्रस्ट किया है।
कैसे धैर्य धरे मेरा मन कोई इसे आकर बतलाये।।

जाने क्या होगा अब मेरा एक बवंडर सीने में है,
सर्पो की घाटी में जीना नियति यही अब जीने में है।
ऐसा लगता ज्यों शरीर में तीक्ष्ण गरल सागर लहराये।।

फिर भी मैं अविजित पर्वत सा अपना कर्म किये जाऊँगा,
एक अकेले अपने दम पर अपनी मंजिल को पाऊँगा।
ऐसी क्षमता है न किसी में किंचित भी विचलित कर जाये।।

अब कोई परवाह नहीं है कोई साथ न दे अब मेरा,
गहन तिमिर की परछाई को चीरूँगा लाऊँगा सबेरा।
मैं ऐसा मछुआरा जिसके जाल में खुद मछली ही आये।।

हमें भविष्यत की ये थाती नई पीढ़ियों को देनी है,
पग नीचे आधार शिला है साथ हथौड़ी है छेनी है।
मूर्ति गढ़ूँगा सुखद अनागत की देखेंगे विगत के साये।।

जीवन मधुमय हो जाता है

जब भी तुम मिलने आते हो जीवन मधुमय हो जाता है।

जो भी चाहें शेष हमारी थोड़ी या सारी की सारी,
भोले नयनों की भाषा में पूरा आशय हो जाता है।

मलयानिल जैसी खुशियों में हीरकनी जैसी सुधियों में,
आने वाला पल पल जल की बूँदों की लय हो जाता है।

वय की इस ढ़लती दुपहर में ढ़हते घाटों के पुष्कर में,
जिसको तुम सा रत्न मिले वह यौवन अक्षय हो जाता है।

बातें तुम करती हो खुल के मिश्री सी बातों में घुल के,
चाहे जैसा पथ हो बातों-बातों में तय हो जाता है।

हँस देती हो बिजली चमके दम दम मोहक मुखड़ा दमके,
पलक जो झपको अस्त जो खोलो तो भाग्योदय हो जाता है।

मिली संपदायें हों जैसे झूठ भी बोलूँ बोलूँ कैसे,
लाखो और करोड़ो का धन पल में संचय हो जाता है।

हनुमान जी में

वंदनीय जिन्हे तीनो लोको ने बताया है।
हनुमान जी में प्रभु राम जी की छाया है।।

जिनके विशाल वक्ष में विराजमान है,
श्री राम जानकी वही तो हनुमान है।
जिनका मधुर रूप आत्मा को भाया है।
हनुमान जी में प्रभु राम जी की छाया है।।

जिनकी विराट अंजली ने गिरि धारा है,
उन्ही हनुमान जी का सभी को सहारा है।
जिनकी अपार क्षमता ने मन लुभाया है।
हनुमान जी में प्रभु राम जी की छाया है।।

आंजनेय मन में भरे सनेह सप्त-सिंधु,
दोनो नयनों में रश्मि तारे सूर्य और इन्दु।
जिनके हृदय में भक्ति बलशाली काया है।
हनुमान जी में प्रभु राम जी की छाया है।।

इस कलिकाल के साकार ईश बजरंग,
महा ज्ञानवान नीतिवान तेज अंग-अंग।
आस्था के मंदिरों में इनकी ही माया है।
हनुमान जी में प्रभु राम जी की छाया है।।

महा धैर्यशाली बलशाली तेजवान हैं,
कर्म में ही लीन रहे चतुर सुजान हैं।
सच तो है महानायकत्व ही निभाया है।
हनुमान जी में प्रभु राम जी की छाया है।।

जिनकी हुंकार मात्र से पहाड़ डगमगाये,
एक ही छलांग में समुद्र जो छलांग जाये।
दुष्ट दानवो का नाम धरा से मिटाया है।
हनुमान जी में प्रभु राम जी की छाया है।।

हो असीम हो अनंत

हो असीम हो अनंत सर्वदा तुम्ही,
दूर करते मानवीय आपदा तुम्ही।

तुम ही सूर्य तुम ही चन्द्र, ग्रह-नक्षत्र हो,
सृष्टि में विराजमान स्वर सहस्त्र हो।
तुम ही व्योम तुम धरा हो श्रंग भी तुम्ही,
सप्त सागरों का पुण्य अंग भी तुम्ही।
शंख चक्र पदम लिये हो गदा तुम्ही।
दूर करते मानवीय आपदा तुम्ही।

तुम ही कामधेनु कल्पवृक्ष कल्प हो,
आधि व्याधियो से मुक्ति का विकल्प हो।
तुम ही अग्नि तुम ही नीर वायु भी तुम्ही,
हो सदा त्रिलोक में चिरायु भी तुम्ही।
भक्ति भाव की अपूर्व सम्पदा तुम्ही।
दूर करते मानवीय आपदा तुम्ही।।

मन के मंदिरों में हो विराजमान तुम,
हर महान आत्मा से भी महान तुम।
सत्य शिव औ सुन्दरं का मूर्त रूप हो,
तुम सदा नवीन नव्य हो अनूप हो।
तुम ही गंगा तुम ही यमुना नर्मदा तुम्ही।
दूर करते मानवीय आपदा तुम्ही।।

देह नीलिमामय थी

उचित नहीं था रखना जग पर आस्था,
कोसों दूर रहा वो भी जो पास था।

रहे अश्रु छलकाते जिस जिस के लिये,
आज सभी वो देखो कितनी दूर हैं।
जिनके सुंदर मुखड़ों पर मोहा किये,
तथाकथित वे चेहरे कितने क्रूर हैं।
जलता हुआ अभी जो निकला श्वाँस था।
जिंदा हूँ इसका अब तक आभास था।।

कभी नहीं सोचा था हमने मार्ग में,
इतने सारे अवरोधक हो सकते हैं।
साथ हमारे जो भी सहयोगी रहे,
अवसर आयेगा ऐसा खो सकते हैं।
चंदनवन के बीच कहीं पर वास था।
देह नीलिमामय थी यह अहसास था।।

दूर क्षितिज तक दिखता अब कोई नहीं,
जितने भी थे आकर्षण सब नष्ट से।
नाम और यश जो भी था अर्जित किया,
नियति-चक्र में फँसकर अब पथभ्रस्ट से।
हिम बनकर जो गला हृदय आकाश था।
मन कहता यह जीवन का संयास था।।

बस प्रसून की चाह यही थी कुछ करे,
वातावरण महक जाता इस चाह में।
सोंधी-सोधी दसो दिशायें बोलती,
कंचन कलश मिले सबको इस राह में।
सर से लेकर पाँवों तक जो लाश था।
लोग यही कहते हैं वो मधुमास था।।

साहब! इतनी दया करो

छीनों मत नौकरी भले तुम सौ इल्जाम धरो,
साहब! इतनी दया करो।।

यही नौकरी मेरे भूखे बच्चों का संबल है,
टूटे सपनों की पूँजी है पत्नी का आँचल है।
मेरे जीवन की झोली में कुछ वरदान भरो।
साहब! इतनी दया करो।।

यही नौकरी मेरी बूढ़ी माँ की सूखी रोटी,
यही नौकरी वृद्ध पिता के तन की फटी लँगोटी।
मेरे संकट की घड़ियों की कुछ तो पीर हरो।
साहब! इतनी दया करो।।

यही नौकरी मेरे आँगन दीप जलाती है,
कष्टों में ही सही मगर परिवार चलाती है।
अपना गुस्सा छोड़ जरा गहराई में उतरो।
साहब! इतनी दया करो।।

आज के समाज का

मेरे मन इसी बहाने ले चलूँ मैं,
चल तुझे शहर घुमाने ले चलूँ मैं।
देख भीख माँगते भिखारियों को देख।
चेहरे की इन शिकन की धारियों को देख।।
देख आम आदमी की जिंदगी है क्या,
भावना किसी की नींद से जगी है क्या?
हर तरफ तिमिर है रोशनी ठगी है क्या।
मन पे चल रही हजार आरियों को देख।।

देख मेरे मन तू स्वाभिमान देख ले,
पाँव पे झुका है आसमान देख ले।
आचरण की कीमती दुकान देख ले।
क्वाँरी लाज लूटते शिकारियों को देख।।
चलते चलते सुन तू ये शहर भी देख ले,
पी रहा है आदमी जहर भी देख ले।
ग्रीष्म की तपी ये दोपहर भी देख ले।
झुलस गयी जो ताप से तू क्यारियों को देख।।

किस कदर भरी हुई हैं गाड़ियाँ सभी,
देख फट गई चिकन की साड़ियाँ सभी।
चलते चलते रूक गई हैं नाड़ियाँ सभी।
जायेंगी कहाँ तू इन सवारियों को देख।
आज के समाज का कुकृत्य देख मन,
हर तरफ लहूलुहान दृश्य देख मन।
हो रहा उधर वो नग्न नृत्य देख मन।
घायलों की पंक्ति और लारियों को देख।।

चूनर उड़े यान हो जाये

परेशानियाँ पग पग पर हों कैंची हर जुबान हो जाये,
ऐसा भी क्या रूप तुम्हारा चूनर उड़े यान हो जाये।

जहाँ से गुजरे जिधर से गुजरे नजरें वार करें कसकर,
नजर बचाकर नजर मिलाकर नजरें चार करे हँसकर।
भरे देह में सिहरन कोई चपल इशारों से ऐसी,
सरल कुँवारापन बरसों का पल में परेशान हो जाये।

एक सहज मुस्कान तुम्हारी ऐसी रेखा खीचें मन पर,
नहीं मिटाने से मिट पाये यत्न करे कोई जीवन भर।
मुस्कानों के शिलालेख रचकर प्राणों की पगडंडी पर,
डर है कहीं न देह तुम्हारी दावानल समान हो जाये।

कर लेते हैं लोग इशारों में ही जाने कितनी बातें,
भर लेते हैं लोग आँचलों में ही जाने कितनी रातें।
इसीलिये अब दौर चले कुछ ऐसा बातों का रातों का,
इन दोनो के बीच जिंदगी की ऊँची उड़ान हो जाये।

अलसाये यौवन के झरने का जल पीने गीत चले है,
भाव शकुनि बन पंख खोलकर नभ में उड़ने को मचले हैं।
तब तो इतना निश्चित ही है प्यास बुझेगी इन अधरों की,
तीर चलेंगे ही ऋतुपति के कटि ही जब कमान हो जाये।

एक नाम दे दो जीवन को

एक नाम दे दो जीवन को भले कहो तुम शूल,
हमको तो ऐसा लगता ज्यों पग से कुचला फूल।

चुटकी चुटकी मिले सबेरा भले अँधेरो ने हो घेरा,
करना ही पड़ता है सबको इन सबके अनुकूल।

दिखता जिसमें एक झरोखा इस पल धोखा उस पल धोखा,
कभी कभी तो साथ मूल के लेता ब्याज वसूल।

मिलते कितने लोग सयाने जाने हों या हों अनजाने,
लेकर के विश्वास में अपने करता नष्ट समूल।

तुमको आना एक दिन है

तुमको आना एक दिन है पास मेरे,
जानता हूँ ये नियति टल ही नहीं सकती,
आओगे तुम तोड़कर बंधन घनेरे।

पाँव रोकेंगे तुम्हे पर तुम न मानोगे,
छोड़कर दुनिया को मुझको अपना जानोगे।
जानता हूँ तुम करोगे जो भी ठानोगे,
आ भी जाओ फूल मौसम ने बिखेरे।

तुमको मेरे वास्ते उसने बनाया है,
इसलिये वो तुमको मुझको पास लाया है।
जानता हूँ अपना मन भी तुम पे आया है,
अब न तरसाओ कि महके हैं सबेरे।

तुम प्रकृति के मुक्त झरनो की कहानी हो,
गुलमोहर चम्पा चमेली रात रानी हो।
जानता हूँ तुम ही मेरी जिंदगानी हो,
आत्मा की बाँसुरी तुमको ही टेरे।

हो गया मन

फिर तुम्हारी कामना की आग में दहने,
चल पड़ा मन हिम शिखर के छंद स्त्रोतों सा,
रूप की मधुघाटियों के बीच में बहने।

जैसे धारायें सहस्त्रों फूट पड़ती हो,
तुम हमारी भावना में रम गये हो।
जैसे मंदिर में अनेकों शंख गूँजे,
हर घड़ी हर पल हमें लगते नये हो।
उड़ गया मन शांति के उजले कपोतो सा,
फिर तुम्हारे पास अपनी बात को कहने।

जैसे झीलों में कमल के दल खिले हों,
तुम हमारे लोचनों में यूँ दिखे हो।
जैसे सादे पृष्ठ पर अंकित गजल कोई,
गीत लिपि में तुम ही प्राणों पर लिखे हो।
हो गया मन मौसमों के मस्त झोकों सा,
हमने रच डाले तुम्हारी याद के गहने।

जैसे सागर के किनारे हों मिले मोती,
तुम मिले हो एक मोती की तरह हमको।
जैसे गंगा की लहर पर दीप जलते हों,
तुम लगे हो एक ज्योती की तरह हमको।
खुल गया मन प्रीति के उन्मुक्त होठों सा,
फिर हृदय की शून्यता के गढ़ लगे ढ़हने।

हिन्दी भाषा अमर रहेगी

हिन्दी भाषा अमर रहेगी।
जगती तल में युगों युगों तक,
यह जनवाणी मुखर रहेगी।

अपने घर में बनी पराई
आज भले हो, कल को न होगी,
एक दिवस ऐसा आयेगा
दूर अधर से पल को न होगी।
हमसे जो भी हुई है गलती,
बधु! देखना सुधर रहेगी।

जिसका शब्द शब्द मधुरिम है
जिसमें भाव भाव पूरित है,
जिसकी लिपि है देवनागरी
उसमें मानवता संचित है।
यह देवों की मनोकामना
मन में आठों प्रहर रहेगी।

कोई कितनी कोशिश कर ले
इसका अहित न कर पायेगा,
इसके अंतर की गंगा में
तैरेगा जो तर जायेगा।
यह भारत के नहीं एक दिन
दुनिया के हर शहर रहेगी।

आशाओं ने नमस्कार की

मुझको छलने वाले तुमको देखे जाओ समय छलेगा,
अहम तुम्हारी अंतरात्मा का हिम के जैसा पिघलेगा।

इतना दर्द दिया है तुमने जिसकी नहीं कल्पना की थी,
क्षमा माँगने को तत्पर हूँ तुमसे प्रणय याचना की थी।
जीवन की यह बड़ी भूल थी पर तुम इसके योग्य नहीं थे,
जबकि तुम्हारे लिये देवियों से करबद्ध प्रार्थना की थी।
इतना क्या कम है इतने दिन मेरे भ्रम को जिंदा रक्खा,
आज उसे भी तोड़ दिया मन शायद कोरे हाथ मलेगा।

आशाओं ने नमस्कार की साथ निराशाओं का पाया,
रश्मि रश्मि हो मौन चली है ऐसा अँधियारा गहराया।
यह सब संभव हुआ तभी जब स्वार्थ तुम्हारा प्रखर हो चला,
ठेस लगी तो विश्वासों का प्राणों का पंछी अकुलाया।
लेकिन तुमको इन सबसे क्या लज्जाहीन आवरण ओढ़े,
तुम स्वच्छन्द जिंदगी भोगो यौवन देखे जाओ ढ़लेगा।

कर रहे हम आज शर-संधान

कर रहे हम आज शर-संधान
सत्ता वक्ष तू अपना बचा ले।
तोड़ना हमको नहीं आसान,
चाहे जिस तरह तू आजमा लें।
आग की लपटें लिये साँसे हमारी,
कर्म की गीता हमारे हाथ में है।
आज है मौसम हमारी उँगलियों पर,
क्रांतिकारी काफिला भी साथ में है।
हम नहीं उस किस्म के इंसान,
जिनको बकरियों सा तू हँका ले।
आज हमको चाहिये जो पायेंगे वो,
और माँगेगे नहीं बस छीन लेंगे।
आज है मेहनतकशों का दिन शपथ है,
हाथ में हम क्रांति की संगीन लेंगे।
बन गये हम वक्त की पहचान,
कातिल भावनाओं को दबा लें।
देखती आँखे भविष्यत हम सभी का,
पाँव लेकर के पवन की गति चले हैं।
क्योंकि हम भी जानते हैं मार्ग में,
सैकड़ों तूफान आँधी जलजले है।
अब हमारे हाथ हर वरदान,
शापित दृष्टि तू अपनी हटा ले।

आज भी मन परेशान है

रास्तों में भटकना पड़ा,
आँधियों से लिपटना पड़ा।
शीश प्रस्तर शलाकाओं से,
हमको हर दिन पटकना पड़ा।

जिंदगी से गिला कुछ नहीं,
जिन्दगी से मिला कुछ नहीं।
चेतना से चरण-युग्म का,
सत्य है सिलसिला कुछ नहीं।
बस चले और चलते रहे,
आठ यामों में बँटना पड़ा।

आज भी मन परेशान है,
कितनी उलझन में इंसान है।
दम्भ के पुष्प धारे हुए,
जीना पल भर न आसान है।
ऐसी स्थिति बनी लक्ष्य पर,
चील बनकर झपटना पड़ा।

हमने चाहा कि कुछ हो नया,
साल प्रत्येक आया गया।
हम प्रयत्नों में उलझे रहे,
रहा घटता कोई वाकया।
नित्य बढ़ती गई मन व्यथा,
स्वयं से हमको कटना पड़ा।

कुछ असंभव नहीं है

शब्द में ब्रम्ह है मानिये,
आत्मा क्या है पहचानिये।
जीव आया है किस लोक से,
जायेगा ये कहाँ जानिये।

मुठ्ठियाँ बाँधकर आये हैं,
साथ में कुछ नहीं लाये हैं।
मुठ्ठियाँ खोल कर जायेंगे,
सोंचिये क्या यहाँ पाये हैं।
पाप के सिंधु में तैर कर,
बस कुयें खोदे अपने लिये।

ये धरा मात्र आधार है,
इसके सीने में बस प्यार है।
शून्य में शून्य ही शून्य है,
चल रहा कर्म-व्यापार है।
चाँद-सूरज नयन ईश के
नित्य जलते प्रखर ये दिये।

कुछ असंभव नहीं है यहाँ,
जी रहे इस जगत में जहाँ।
पाँव भटके हैं जिसके लिये,
वस्तु वह पायेंगे हम कहाँ।
बस निराकार-साकार का,
सत्य क्या जानने को जिये।

पग जैसे हो गये

तुम्हारे रूप का अलग अंदाज है,
नहीं मैं जानता क्या इसका राज है।

मुखड़े पर रश्मि की लाली छायी हुई।
लगता है व्योम से तुम हो आयी हुई।
आँखो में जागते सपने हैं भोर के,
पग जैसे हो गये अनुगामी मोर के।
बोलो जो तुम लगे बजता कोई साज है,
कोयल से भी मधुर मीठी आवाज है।

होठों की बात क्या मिसरी की खान हैं,
देते हर पल हमें जीवन का दान हैं।
साँसों में हो बसे जागूँ या सोऊँ मैं,
तुम हो मेरे तुम्हें पाऊँ या खोऊँ मैं।
तुमको तो देखकर लगता ये आज है,
जैसे ऋतुराज को तुम पर ही नाज है।

चेतनता से भरी गोरी कलाइयाँ,
मोहक श्रृंगार को ढ़ेरो बधाइयाँ।
जीवन की जान्हवी में लहरों सी बहो,
तुमको तो चाहिये मेरे मन में रहो।
तुमसे पूरा मेरा होता हर काज है,
तुम्हारे हाथ में प्रीति की लाज है।

युवा चेतनाओं

आपस का संघर्ष बचा लो युवा चेतनाओं,
काश्मीर-पंजाब जल रहे असम सुलगता है।
अपना भारत वर्ष बचा लो युवा चेतनाओं।।

इसके तन का लहू गिरे तो वो भी अपना है,
इस माटी के बिना हमारा जीवन सपना है।
गंगा-यमुना की लहरें घायल हैं लगता है,
तुम अतीत-आदर्श बचा लो युवा चेतनाओं।।

इसका हर कण चाँदी है तो हर क्षण सोना है,
मातृभूमि की आँखों को हरगिज न भिगोना है।
एक रश्मि के उगने से अँधियारा भगता है,
शेष हृदय का हर्ष बचा लो युवा चेतनाओं।।

टूटेगा जो देश तो बिखरेंगे हम भी तय है,
बस भारत माता ही अपने जीवन की लय है।
कोई पराया आकर के हम सबको ठगता है,
जीवन का उत्कर्ष बचा लो युवा चेतनाओं।।

धार लेना इस हृदय में

गुनगुनाना प्रीति के बाँचे हुए ये छंद तुम भी,
धार लेना इस हृदय में जिंदगी की साधना के
ये मधुर अनुबंध तुम भी।...

क्या पता पड़ जाये इनकी कब जरूरत बंधु मेरे,
अनगढ़े से ईश की ये एक मूरत बंधु मेरे।
एक भोले शिशु सरीखे इनके नयनों को पढ़ो,
बाँध लेना एक लय में हर विषम सम्बंध तुम भी।

आत्मा की वेदिका के अक्षतों की भाँति हैं ये,
सप्तरंगी सूर्य के स्वर्णिम रथों की भाँति है ये।
शब्द वेधी तीर से गतिमान बनकर तुम बढ़ो,
है अनागत का मुखर स्वर बाँट लो आनंद तुम भी।

ये हमें लगते तपस्वी के अलौकिक मंत्र जैसे,
या कि जीवन को नई दे राह जो उस यंत्र जैसे।
साधना की श्रेष्ठता की एक शुभ प्रतिमा गढ़ो,
इनकी गति में ही प्रगति है प्रिय बनो रवि-चंद तुम भी।

रश्मि जैसे फूटती है भोर के तन से सुघर सी,
जो नयन की देहरी से साँस में जाती उतर सी।
जिंदगी करके सरल उन्नति के शिखरों पर चढ़ो,
पुष्प के होंठो से निकली बाँध लो यह गंध तुम भी।

जान्हवी की धार जैसी ये दिशा देगी तुम्हे भी,
ज्योति-कलशों में भरी सुखमय निशा देगी तुम्हे भी।
उगती कोपल के सरीखी अपना मन हर पल गढ़ो,
इस तरह होंगे कभी निर्झर बनो स्वच्छन्द तुम भी।

अपने से करते संग्राम हैं

शांत-शांत मानस की भूमिजा,
पर अशांत पुरूषोत्तम राम हैं ।

सांसों से दूर हुई जानकी,
आत्म कक्ष सन्नाटों से भरा।
लव कुश ही नयनों के दीप हैं,
शेष इन्ही दोनो का आसरा।
असमंजस की स्थिति आ पड़ी,
अपने से करते संग्राम हैं।

जनमानस तक हताश हो गया,
भ्रातागण चिंतन में लीन हैं।
मातृ-शक्तियाँ निराश हो चली,
गुरू वशिष्ठ की चिंता दीन है।
क्या करें कि सब कुछ हो पूर्व सा,
भा रहे न मन को राज-काम हैं।

जग भर को भवसागर तारते,
स्वयं आज कितने असमर्थ हैं।
कितनी भी कोशिश करें परंतु,
हर प्रयास निष्क्रिय है व्यर्थ हैं।
प्रभु उन्हे उबार लें है प्रार्थना,
भक्तजन करें उन्हें प्रणाम है।

पंथ नया फोड़ दो

धारायें मोड़ दो श्रंखलायें तोड़ दो,
पर्वत को धक्का दे पंथ नया फोड़ दो।

जीवन को जीना है अमृत घट पीना है,
रक्त से भी मँहगा है देह का पसीना है।
असहायों पर उठती बाँह हर मरोड़ दो।।

सबने ही माना है ये नया जमाना है,
और इस जमाने पर रंग नया चढ़ाना है।
निश्चित होगा प्रकाश सूर्य को निचोड़ दो।।

मृतक बनी आत्मायें करती दायें बायें,
उस पर भी जिंदगी तेज नया भर जाये।
उन्नत आकाशों की आत्मा झिझोड़ दो।।

चिंतन ये कल का है भोगे हुए छल का है,
अनुत्तरित प्रश्नों के संभावित हल का है।।
सौ करोड़ धन नहीं शब्द सौ करोड़ दो।

नदी जल विहीना

समय के पखेरू के पर जलने वाले,
विधाता अगर हो सके तो बचा ले।

धरा रूग्ण बीमार दिखने लगी है,
कोई त्रासदी जैसे लिखने लगी है।
यहाँ रात आती थी उम्मीदें लेकर,
मगर अब चली जाती है नीदें लेकर।
लगाते तुम्ही पार नैया जगत की,
अगर हो सके हमको गोदी सुला ले।

क्षितिज तक न कोई सितारा दिखा है,
मनुज भाल पर बेसहारा लिखा है।
नदी जल विहीना शिखर सब हुए नत,
कहीं सागरों मध्य सोया अनागत।
उन्हें अपने आशीष की छाँव दे दें,
जो पथभ्रष्ट हैं पाँवों में जिनके छाले।

न जाने अचानक ये क्या हो गया है,
जो अपना नहीं वो सगा हो गया है।
प्रखर तेज रवि का मलिन हो चला है,
कहीं हो रहा क्या किसी का भला है।
सभी स्वयं से रूष्ट संतुष्टि छोड़े,
बचा शेष जो उसको अपना बना ले।

गीतों के सावन बरसेगें

शांत पड़े मानस-मंदिर में थोड़ी सी हलचल हो जाये,
नयनों में चाँदनी बिखेरो आत्मागंन शीतल हो जाये।

मुखड़े पर मासूम शरारत मन को मोहित कर जाती है,
साँसों में मलयानिल खुशबू जैसे शतदल भर जाती है।
बरबस कोई नदी प्रेम की हम दोनो के बीच बहे तो,
सृष्टि बिखेरे प्रीति रागिनी पीत रंग आँचल हो जाये।

गीतों के सावन बरसेंगे छंदो की बारिश भी होगी,
नई कामनाओं के मन से जुड़ने की कोशिश भी होगी।
बीच हमारे स्वर्ण रजत की जो दीवार खड़ी लगती है,
शायद वह भी ढ़हे तो काया की भी शांत अनल हो जाये।

चमक जायें बालियाँ कान की महक जाये पायलें पगों की,
गतिमयता बढ़ ही जायेगी देह, प्राण, मन और रगों की।
उदासीनता इस जीवन की संभव है यदि दूर हुई तो,
सपनों की छोटी सी कुटिया हो साकार महल हो जाये।

जिंदगी में गीत सी गम्भीरता

सूर्य की तेजोमयी किरणों सी है,
जंगलों में भागते हिरणों सी है।
जिंदगी है कल्पवृक्षों की लड़ी,
जिंदगी है काल से आगे खड़ी।

जिंदगी मीठी धुनों की बाँसुरी,
ओस की बूँदों नहाई पाँखुरी।
यह कमल-पत्रों सरीखी नीर में,
सम्मिलित है आदमी की पीर में।
जिंदगी अपनी ही जिद में जब अड़ी,
मील के पत्थर सरीखी ये गड़ी।

जिंदगी में गीत सी गम्भीरता,
इसमें सुख का और दुख का है पता।
घाटियों सी इसमें है तल्लीनता,
सज्जनों की भाँति है शालीनता।
यह अनागत से जुड़ी कोई कड़ी,
मौत आकर इसके ही पाँवों पड़ी।

जिंदगी की है अलग अपनी कथा,
ध्यान से देखो अलग इसकी व्यथा।
यह नहीं जागीर में मिलती कभी,
यह नहीं मरूभूमि में खिलती कभी।
आदमी की आदमीयत से बड़ी,
युग-युगों की आत्माओं में जड़ी।

बनाते रहे लोग सौ सौ बहाने

बनाते रहे लोग सौ सौ बहाने,
मगर खोज पाये कहाँ निज ठिकाने।

भटकते-भटकते दिशा भ्रम हुआ है,
हुए मृत उजाले गहन तम हुआ है।
समय अपनी मनमानियाँ कर रहा है,
महाकाल का भय नहीं कम हुआ है।
वो आया कहाँ से भले जानते हों,
कहाँ जायेगा आदमी हम न जाने।

है सम्मुख परिस्थिति कठिन आ रही है,
महामृत्यु की गीत-गंगा बही है।
युगों के अधर से लगी वेद वंशी,
मगर आत्मा की कथा अनकही है।
सभी को नहाना है इस जान्हवी में,
यही सोच गुजरे हैं कितने जमाने।

हमें तैरना भी तो आता नहीं है,
सही मार्ग कोई दिखाता नहीं है।
कभी भाषा मन की न पढ़ पाया कोई,
तभी प्रेम परिणाम पाता नहीं है।
नहीं बाँटता कोई दुख दूसरे का,
यही सत्य है बात कोई न माने।

प्रसून अब नियति के सहारे न बैठें,
नदी बाढ़ पर है किनारे न बैठें।
नहीं इसकी घनघोर लहरों में डूबें,
करें कुछ जतन मन को मारे न बैठें।
जो बूढ़े सयाने हैं दें राय अपनी,
लगे हैं सभी आप बीती सुनाने।

जाने कैसा एकाकीपन

जाने कैसा एकाकीपन मन में भरा हुआ,
एक अजब सी सोच कि जिससे अंतर डरा हुआ।

व्यक्त नहीं हो सकता कैसा चिंतन चलता है,
एक अनोखी अग्नि देह का कण-कण जलता है।
भावनाओं का ज्वार वेग से अधिक उछलता है,
किसी पाप की छाया का दानव ज्यों पलता है।
कोई अभिशापित सच जैसे सोना खरा हुआ।

नहीं सूझता मार्ग कोई भी जायें किधर कहाँ,
धरा दहकने लगती है पग पड़ते जहाँ जहाँ।
काली आकृतियाँ सी दिखती जैसे यहाँ वहाँ,
सम्मुख जल में उतराती ज्यों नौका एक यहाँ।
बोया हुआ खेत ज्यों कोई पूरा चरा हुआ।

अब भविष्य का चित्र सामने खण्डित हुआ पड़ा,
उजले शीशे के ऊपर ज्यों पत्थर एक जड़ा।
समझ नहीं आता है क्यों कोई छोटा कोई बड़ा,
अपनी जिद पर आकर जैसे बच्चा कोई अड़ा।
जब भी दिखता जहाँ भी दिखता सपना मरा हुआ।

मानव में सद्गुण भी

दुनिया का हाल कभी देख तो विधाता,
इस देखा-देखी में तेरा क्या जाता।

मानव में सद्गुण भी मानव में दुर्गुण भी,
कबिरा बन गाता है सगुण और निर्गुण भी।
फिर भी लाचार दिखे बेबस आधार दिखे,
उस पर भी तू उसको पल-पल भरमाता।

मानव में दुख भी है मानव में सुख भी,
उदर बना मानव का ज्वाला सा मुख भी।
इसको विस्तार तू ही देता दिन रैना,
कर्म तो वो करता है फल में क्या पाता।

मानव में आशा भी और है निराशा भी,
उगती बन नागफनी मन में अभिलाषा भी।
चेतनता बाँट कर आलस का नाश कर,
काम, क्रोध, लोभ, मोह से जग का नाता।

मानव में छ्ल भी है मानव में बल भी,
दुख देता कल भी था दुख देगा कल भी।
हर दुख से दूर कर सुख से भरपूर कर,
तू ही तो पिता सबका तू ही तो माता।

कोई ऐसा गीत लिखा होता

कोई ऐसा गीत लिखा होता हर अधर गुनगुनाता रहता,
जिसमें डूबा उतराता सा मन शांति नई पाता रहता।

जिसमें नदियां झरने होते होते पर्वत भी सागर भी,
जिसमें जीवन का हर सपना सच होता और उजागर भी।
जिसमें आगत का चित्र मधुर सम्मुख सबके आता रहता,
कोई ऐसा सृजन किया होता जग को सदियों भाता रहता।

जिसमें कल्पद्रुम का नवीन कोई बीज कहीं रोपा होता,
जो एक वसीयत बन जाता नई नस्लों को सौंपा होता।
जिसमें मानव का मानव से अपने पन का नाता रहता,
आती न निराशा पास कोई यदि प्यार से समझाता रहता।

जिसमें तुम भी शामिल होते सहयात्री बन कर जीवन में,
तुलसी का पावन पौधा बन उगते आत्मा के आँगन में।
हो जाता परिचय में विशिष्ट व्यक्तित्वों पर छाता रहता,
यदि साथ तुम्हारा मिल जाता हर घड़ी मुस्कुराता रहता।

जिसमें मानवता आर्तनाद करती न कहीं दिखती हमको,
हर रात चाँदनी तारों का मधुपत्र नहीं लिखती हमको।
नीला अम्बर आशाओं पर यदि आग न बरसाता रहता,
आक्रोश न भरता साँसों में कल खुद को न दुहराता रहता।

कोई भी हो नहीं अकेला

यह बसंत की है शुभ बेला,
कलियों का पुष्पों का मेला।

उत्सव है ये मानव-मन का,
खुशियों का शाश्वत जीवन का।
संदेशा है अपने पन का,
अवसर एक सृष्टि-दर्शन का।
हरियाली के बहते झरने,
महक भरा आया एक रेला।

प्रीति भरा उपहार समय का,
मौलिकता की मधुरिम लय का।
प्रकृति-परी की अनुपम वय का,
शाखों-तरूओं के अभिनय का।
पत्ती-पत्ती अपनी धुन में,
चलता जैसे कोई खेला।

इस बसंत के संग महकें हम,
इसके रंगों से दहकें हम।
दो पल पंछी बन चहकें हम,
लेकिन कभी नहीं बहकें हम।
साथ सभी जूही गुलाब के,
कोई भी हो नहीं अकेला।

नये अनुभव होने लगे

देखा जो तुमको नये अनुभव होने लगे,
गुलमोहरी स्वप्न जैसे मन को टोने लगे।

तुलसी-रामायण जैसी अपूर्व दृष्टि है,
लगता है नाच उठी यह सारी सृष्टि है।
मंत्रमुग्ध नैन हुए मीरा सी साधिका,
खोयी हुई अपने ही आप में आराधिका।
हम भी तो शून्य बीच जैसे खोने लगे।
गुलमोहरी स्वप्न जैसे मन को टोने लगे।

रम्भा हो उर्वशी हो या कि हो तिलोत्तमा,
मन चाहे कर डालें रूप की परिक्रमा।
सुधियों के भोजपत्र पर लिखी कथा कोई,
शांत चित्त मनोकामना पढ़ें ऋचा कोई।
राजहंस मानस में मोती पोने लगे।
गुलमोहरी स्वप्न जैसे मन को टोने लगे।

तुमने जो पढ़ी रची प्यार की किताबे,
मौसम भी बाँचे मनुहार की किताबें।
शतवर्षों जो सोयी पल में जगने लगी,
कचनारी भावनायें हतप्रभ लगने लगी।
मेघदल वसुंधरा को जल से धोने लगे।
गुलमोहरी स्वप्न जैसे मन को टोने लगे।

बिन तुम्हारे जिंदगी

पायलों से गीत अग्निझील से दिखे,
कौन जल तरंग-धूप-चाँदनी लिखे।
प्यास की गली गली उजाड़ हो चली,
बिन तुम्हारे जिंदगी पहाड़ हो चली।

तुम थमे तो थम गये प्रवाह में सपन,
तुम जिधर चले उधर चले मेरे चरन।
आ मिलो कि जल प्रपात हो गये नयन,
साँस आयु की बुनी निवाड़ हो चली।

खींच दो दिशाओं में अनाम हाशिये,
रूप के हजार आइने जहर पिये।
रोशनी बटोरते कई पहर जिये,
नीर और क्षीर की बिगाड़ हो चली।

मौन हर पलक उदास पुतलियाँ जलीं,
ओढ़कर दहन तमाम मछलियाँ चलीं।
बादलों के हाथ सूर्य-रश्मियाँ छलीं,
झाँकती दराज हर किवाड़ हो चली।

क्या कर लेंगे कल

चलो चलें भर लें बाँहों में
बीत रहे जो पल।

हो जायेगा एक महोत्सव पूरा इस जीवन का,
तन का मन का मौसम का अपने घर आँगन का।
सुखद यही है नभ त्यागें हम
ग्रहण करें भूतल।

करें आज कुछ ऐसा मिलकर सदियाँ याद करें,
गाये अनगाये अनबोले स्वर आबाद करें।
पायें इतनी प्रीति हृदय की
कटुता जाये जल।

जाना अभी हमें है अपनी मंजिल से आगे,
बिखरे हुए स्वप्न खुशियों के वर्तमान माँगे।
जो भी है करना है कर डाले
क्या कर लेगें कल।

कभी-कभी धरती पर

कभी-कभी धरती पर ऐसे आ जाते हैं महात्मा,
जिनके कीर्तिमयी जीवन को देख लजाये चंद्रमा!

एक महात्मा ऐसे ही आये भारत-भगवान बन,
सागर जैसी अन्तरात्मा हिमगिरि जैसे आचरण!
जिनके सत्य प्रयोग न जीवन में झुठलाये जा सके,
जिनके ऐसे कार्य कि हर मानव प्रभुताई पा सके!
जिनकी ऐसी जीवन शैली जो शैली था अनुपमा!!

जिनके ऐसे नयन स्वप्न इंसान व्योम छूने लगे,
सदियों से सोयी भारत माँ सदियो-सदियों को जगे!
आज हमारी जीवन से जब टूट चुकी है आस्था,
गाँधी के संदेश करेंगे दूर मानवों की व्यथा!
उनके विमल विचार कोटिशः लोग चुके है आजमा!!

जगत महात्मा गाँधी के आदर्श कहीं जो धार ले,
तो निश्चित है स्वर्गलोक को इस धरती पे उतार ले!
अगर अहिंसा के सिद्धांतो को अपनाया जा सके,
तो निश्चित परमाणु युद्ध से जग को बचाया जा सके!
उन्हे यही सच्ची श्रद्धांजलि अपनाये संयम-क्षमा!!

चंदन तन नीम हो गया है

दोहरा हो दर्द से गया मन,
चंदन तन नीम हो गया है!

पल में ही साँसे हो उड़न छू,
पल में फिर लौट लौट आती!
सोचों में मात्र तुम बसे हो,
बाते कोई और हैं न भाती!
लगता जैसे हृदय में कोई,
आकर के शूल बो गया है!

बीता कल याद आ रहा है,
पिछला हर दृश्य भा रहा है!
आत्मा का पोर पोर जिसमें,
हँसता और खिलखिला रहा है!
वर्तमान टीसें ही देता,
जाने किस ठाँव सो गया है।

उबरें अब इससे हम कैसे,
कोई आ करके ये बता दे!
आयें कैसे निकट तुम्हारे,
कोई तो रास्ता दिखा दे!
जुड़ता हर भाव जा के तुमसे,
लगता हर स्वप्न खो गया है!

ऐसे गीत सुनाते जायें

सुनने वाले सभी प्रफुल्लित आनंदित जन जन हो जाये,
ऐसे गीत सुनाते जायें जीवन धन्य मगन हो जाये!

बस्ती बस्ती खुशहाली हो सबके मुखड़े पर लाली हो,
कहीं न दिख पाये पतझर का मौसम ऐसी हरियाली हो।
सभी मनस्वी और यशस्वी लिख दें जय गाथा अतीत की,
आज और आने वाला कल खिला एक आनन हो जाये।

ओझल उदासीनता सारी मन की नगरी की करनी है,
दीन दुखी बेबस की पीड़ा मिलकर हम सबको हरनी है।
हमें सृष्टि के हर हिस्से की रखवाली भी करनी होगी,
ऐसी करें कामना जग में सबमें अपनापन हो जाये।

हमें अनागत की परिभाषा नये सिरे से गढ़नी होगी,
सुखद भविष्यत के सपनों की सभी सीढ़ियाँ चढ़नी होगी।
तभी हमारी कल्पनायें भी निश्चित एक उड़ान भरेगी,
कुछ ऐसा अब कर डालें हम मन का सत्य सपन हो जाये।

राजहंस की छवि देते हैं

धरती के वासी अंबर में झूला डाले झूले,
राजहंस की छवि देते हैं तालों वाले बगूले।

प्रखर धूप से दग्ध हो गये उजले पर वाले ये,
उड़ना भूल गये खुल करके मन के काले ये!
जिस सीढ़ी से ऊपर आये आज उसी को भूले!!

इनका कोई नियम नहीं सिद्धांत नहीं कोई,
कुटिल क्रूर कर्मा वंचक सम्भ्रांत नहीं कोई!
जिनसे इन्हे पहचान मिली उनसे ही दाम उसूले!!

इनके पापों का कलशा भर गया छलक जायेगा,
इनकी कलुषित कथा पद्य में कवि कोई गायेगा!
अमृत पान करने वाले अब फाँकेंगे धूलें!!

असमतल जिंदगी अपनी

तुम्हारे रूप का बादल घिरा तो थम नहीं पाया,
जहाँ तक दृष्टि जाती है घटा को नम नहीं पाया!

नयी पा जायेंगी सांसे जो जल के पास है मछली,
जो तुम आ जाओ जीवन में अँधेरी रात हो उजली!
तुम्ही ऐसे हो जिसकी आत्मा ने कम नहीं पाया!
बहा जो रक्त नैनों से अभी तक जम नहीं पाया!

कभी एकांत में पढ़ना हमारे दर्द की कृतियाँ,
तभी लिख भेजना उत्तर में अपनी मौन सम्मतियाँ!
जो मन को बाँधकर रक्खे वही संयम नहीं पाया!
कहाँ भटका नहीं है मन कहीं भी रम नहीं पाया!

अजन्मी थी सदा से आत्मा तुम्हे पा जनम पाई,
कभी जाना नहीं अब जान पाया क्या है गहराई!
हमारे मन को जो बाँधे वही मौसम नहीं पाया!
असमतल जिन्दगी अपनी कभी भी सम नहीं पाया!

कभी मिले अवसर

तुम्हे नहीं मालूम तुम्हारे बिन कोई,
कितना ज्यादा विवश दुखी लाचार है।
अधरों पर खारा समुद्र लहरा रहा,
साँसों बीच दहकता सा अंगार है।

तुम तो अपने मधुर स्वप्न में डूबे हो,
मेरे चिंतन में पल-पल ही आ जाते हो।
मेरी सुप्त भावनाओं को पंख लगा,
मेरे मानस मंदिर में छा जाते हो।
कभी मिले अवसर तो आकर देखना,
मात्र तुम्हारी सुधियों का संसार है।

तुम तो बिंदिया-कंगन-चूड़ी में अटके,
किंतु यहाँ तो प्राण तुम्हीं में अटके हैं।
तुम जादू सा जगा गये वह जीवन में,
अपनी लक्ष्य-दिशा से ही हम भटके हैं।
दावानल के जंगल जैसा झुलस रहा,
तुम्हे खबर क्या मन पर कितना भार है।

अपना तो हर मार्ग तुम्हारा अनुगामी,
अपना तो हर स्वप्न तुम्ही में जीता है।
मन भी ऐसा चाहे या अनचाहे ही,
अभिशापित हो कालकूट बस पीता है।
क्या होगी मन की गति कैसी क्या जाने,
शेष बचा क्या अब कोई आधार है।

प्यार को यदि सागर मानें

प्यार नासमझ हृदयों का बंधन भर है,
कोई प्रेमी इसे कहाँ सच मानेगा।
प्यार न देखे आयु न देखे दुनिया को,
इसे प्यार करने वाला ही जानेगा।
कुछ ऐसी ही भावनाओं में जीता हूँ,
कुछ ऐसी ही भावनाओं में मरता हूँ।
प्यार को यदि सागर मानें तो सागर की,
गहराई की सतहों में पग धरता हूँ।
कुछ ऐसे ही प्यार मैं तुमसे करता हूँ।।

तुम अबोध सुकुमार दूध में धुले हुए,
कैसे गीतों की साँसो में समा गये।
कैसे मेरे प्राण छीन करके मुझसे,
थके थके से नयनों को यूँ रूला गये।
कुछ ऐसे ही विष के घट नित पीता हूँ,
पर कुछ भी कहने सुनने से डरता हूँ।
प्यार को यदि पर्वत मानें तो पर्वत की,
उँचाई की सतहों में पग धरता हूँ ।
कुछ ऐसे ही प्यार मैं तुमसे करता हूँ।।

तुमको अपनी खुद खबर नहीं तुम कैसे हो,
मेरी खबर भला कैसे रख पाओगे।
तुम निज के आकंठ प्रेम में डूबे हो,
यह तीखी वारूणी कहाँ चख पाओगे।

मैं अतीत हूँ अभी अभी तो बीता हूँ,
तुमको देख देख कर पलकें भरता हूँ।
प्यार को यदि जीवन मानें तो जीवन की,
अरूणाई की सतहों में पग धरता हूँ।
कुछ ऐसे ही प्यार मैं तुमसे करता हूँ।।

कभी अगर मेरे गीतों की चौखट तक,
आ पाओ तो छूकर इसे सँवारना।
लेकिन इसके भीतर बिखरे शब्दों को,
भरकर अपने आँचल बीच निखारना।
किसी चटकती हुई झील सा रीता हूँ,
पर नित नया रूप लेकर ही उभरता हूँ।
प्यार को यदि यौवन मानें तो यौवन की,
तरूणाई की सतहों पर पग धरता हूँ।
कुछ ऐसे ही प्यार मैं तुमसे करता हूँ।।

बादल टूट टूट आँगन में बरस रहे,
बूँदों के संग ओले गिरना जारी है।
लेकिन मेरी कलम न रूकने पायेगी,
पूरा करना गीत क्योंकि लाचारी है।
मन की टूटी हुई सिलन हर सीता हूँ,
तुम्हे देखकर जुड़ता और बिखरता हूँ।
प्यार को यदि बादल मानें तो बादल की,
शहनाई की सतहों में पग धरता हूँ।
कुछ ऐसे ही प्यार मैं तुमसे करता हूँ।।

काश कि तुमने देखा होता

चल देते हो मन में गहरा एकाकी पन छोड़ के,
दुख से परिणय करवा करके सुख की बाँह मरोड़ के।

तुम्हे पता ही नहीं कि कैसे घाव मिले आघातों के,
जैसे जल में आग लगी हो बीच कहीं जलजातों के।
जाने कितने मतलब निकले अनचाही सी बातों के,
बड़ी कठिन हैं कालरात्रियाँ हाल न पूछो रातों के।
चल देते हो अभिशापों के उजले वस्त्र निचोड़ के।।

काश कि तुमने देखा होता दावानल जलते कैसे,
काश कि तुमने देखा होता हिम-पर्वत गलते कैसे।
काश कि तुमने देखा होगा खुद को हम छलते कैसे,
काश कि तुमने देखा होता मृत होकर चलते कैसे।
चल देते हो भावुकता के कलश अचानक फोड़ के।।

काश कि तुमने देखी होती नयनों की व्याकुलतायें,
काश कि तुमने देखी होती मुरझाई तन कलिकायें।
काश कि तुमने देखी होती जली हुई अभिलाषायें,
काश कि तुमने देखी होती जीवन की असफलतायें।
चल देती हो उलटी धारा में नौका को मोड़ के।।

तुम्हे पता ही नहीं बीत जाता क्या क्या इन साँसों में,
जैसे पतझड़ छाप छोड़ जाता अपनी मधुमासों में।
जैसे कोई दीवाना घूमें निर्जन आवासों में,
तुम्हे पता ही नहीं कि चलता क्या चिंतन संत्रासों में।
चल देते हो मधुमय शीशे के दर्पन को तोड़ के।।

हम तो बस अपनी लीक चले

जिस जल से काया निर्मल वह गगरी आत्मा पर छलकी,
निर्वसना यदि होगी वाणी तो शुद्ध न होगी यह रसना।।

मन जिस जिस पर बलिदान हुआ उसका पल पल सम्मान हुआ,
जिस पर सर्वस्य लुटाया है वह बेशक व्यक्ति महान हुआ।
हम ही न सराहे गये कभी पड़ना पड़ता खुद पर हँसना।।

कभी तुम भी कोई प्रपंच करो जहाँ आग मिले वहाँ पाँव धरो,
तुम पर न लगे लांछन कोई कभी तुम भी ऐसा काम करो।
करो वातावरण प्रदूषित तुम कभी सर्प नहीं छोड़े ड़सना।।

हम तो बस अपनी लीक चले बड़े सोंच समझकर ठीक चले,
पूरी बस्ती दुख से व्याकुल वह चालें सभी सटीक चले।
प्रभु इन पर कृपा तुम्हारी क्या यदि नहीं तो पेंच सही कसना।।

जीवन है वह नदी

जिसमें पतझर को बसंत को, ग्रीष्म शिशिर को जीना है,
जीवन है वह नदी कि जिसका जल अँजुलि भर पीना है।

कहीं सागरों की गहराई कहीं बर्फ के रजत शिखर,
कहीं वेद के अमर मंत्र हैं कहीं उपनिषद वाले स्वर।
कहीं घाटियों की अल्हड़ता कहीं आत्म सुविचार प्रखर,
कहीं सुखों के मुखर छन्द हैं कहीं दुखों के हैं अक्षर।
इसको धारण वही करेगा जिसका गज भर सीना है,
इसमें सोना-चांदी-हीरे-मोती खरा नगीना है।

कहीं रेत की तीव्र प्रखरता कहीं भयावह जंगल हैं,
कहीं तो भीषण घोर अँधेरा कहीं मृत्यु के दलदल हैं।
कहीं चटकती धूप दिखे तो कहीं मचलते बादल है,
कहीं पे तलवे जल जाते हैं कहीं पे तपते मरूथल हैं।
जिसने छानी खाक बस्तियों की पग बहा पसीना है,
जिसकी झीनी बिनी चदरिया या फिर आँचल झीना है।

कहीं तो प्रस्तर वाले पर्वत कहीं प्रखर सागर गहरे,
कहीं तो एकाकी पन भीषण कहीं उजालों के पहरे।
कहीं घटे ऐसी घटनायें सृष्टि सहित सब हैं ठहरे,
कहीं प्रलय की अगवानी तो कहीं धर्म के ध्वज फहरे।
कहीं नदी आई उठान पर कहीं नदी जल हीना है,
कहीं कोई कबिरा सुधार की लिये हाथ में बीना है।

ऐसे मत मिलना

सह न सकूँ मैं रूप तुम्हारा एक दृष्टि में दम घुट जाये,
ऐसे मत मिलना जीवन धन मात्र एक पल में लुट जाये।

स्वीकारों की ओढ़ चाँदनी आओ तो उजियारा होगा,
नहीं छेड़ना विगत कथायें जिनको तुमने हमने भोगा।
ऐसे आकर मिलो प्रणय की फिर जुड़ जायें टूटी कड़ियाँ,
और बिखरती हुई जिंदगी जीने का मिल संपुट जाये।

हमने बड़े जतन से तुमको नित्य सजाया नित्य सँवारा,
तन को मन को इस जीवन को प्राण सुमन को तुम पर वारा।
लेकिन तुमनें कहीं क्षितिज पर डाल रखा है अपना डेरा,
जहाँ बनायें नया बसेरा कोई तो मिल झुरमुट जाये।

अलग-अलग राहों को हमने अपना-अपना लक्ष्य बनाया,
अलग-अलग रंगो रूपों ने अलग अलग हमको भरमाया।
रही असमतल सदा जिंदगी कुछ ऐसी स्थितियाँ गुजरीं,
समतल प्रीति-भूमि को कर लें ऐसा एक मिल दुर्मुट जाये।

आप की जहाँ पहुँच नहीं

नित्य इसके गुण बखानिये,
वृक्ष को मनुष्य मानिये।

साँस लें ये व्यक्ति के समान,
सृष्टि को सदा ही देते मान।
दानी दानवीर कर्ण से,
देते हैं मधुर फलों का दान।
इनकों दें सुरक्षा हम सभी,
मिल के ऐसे प्रण को ठानिये।

वायु को पवित्र ये करें,
देह-प्राण में महक भरें।
आप की जहाँ पहुँच नहीं,
ये वहीं पे अपने पग धरें।
ये समग्र मानवों के हैं,
इनको अपना मित्र जानिये।

धैर्यशीलता भरी अपार,
जिंदगी में लायें ये सुधार।
अपनी कलियों और फूलों से,
देते आत्माओं को निखार।
इनके जैसा कोई भी नहीं,
चाहे जितनी खाक छानिये।

जल विहीन सरितायें हैं

महानगर के भरमाये साहब हम तो भर पायें,
पी लेती हैं मस्तियाँ ऐसी इसकी बस्तियाँ।

बौने यहाँ निवास करें मुट्ठी में आकाश भरें,
जाने ऐसा क्या अपनी परछाई से आप डरे।
तंग सड़क रिश्तों वाली फिरती छायायें काली,
जल विहीन सरितायें हैं मरी पड़ी मछलियाँ।

कबिरा चादर बीन रहा जुर्म बड़ा संगीन रहा,
जिसने सबको लूटा है वह सत्ता आसीन रहा।
इनका गहरा अर्थ हुआ इनको छूना व्यर्थ हुआ,
सजा मिलेगी शर्तियाँ जल जायेंगीं उंगलियाँ।

रात-रात भर सोचे हम बाल शीश के नोंचें हम,
लोगों द्वारा मिली हुई झेलें नित्य खरोचें हम।
ये हमको भरमा करके अपने पास बुला करके,
वंशी मधुर सुना करके खूब चुभाते तकलियाँ।

सपने भी भगीरथ हो गये हैं

नींद में आकाश की गंगा मचलती है,
और सपने भी भगीरथ हो गये हैं।

आंसुओं में प्यास के चंदन महकते,
यदि कहीं मुस्कान के कंगन बने होते।
छोड़ते पाषाण भी अपनी निठुरता,
सामने यदि रूप के दर्पण सजे होते।
सोचना है व्यर्थ यह सब लोग अपने,
जिंदगी की नाक कर नथ हो गये हैं।

आँख वाली झील में सहमें खड़े,
कुछ अजाने से नये चेहरे यहाँ पर।
पढ़ रहे हैं गीत जीवन के मगर,
हो गये क्या आदमी बहरे यहाँ पर।
क्योंकि इनके स्वार्थ मरू में भागते,
सप्त अश्वों से सजे रथ हो गये हैं।

यह अभावों का नगर है इस नगर में,
हर तरफ दिखते तनावों के किले हैं।
व्यक्ति की खुशियाँ कफन ढाँपें पड़ी,
और मरघट स्वयं इनसे जा मिले हैं।
कौन जलने से उन्हे रोके कहीं,
पाँव जीवन-अग्नि का पथ हो गये हैं।

लुटा-लुटा कर मन की निधियाँ

बैठे हुए तिमिर में देख रहे उजियारी भोर,
जैसे सेंध लगाकर घर के भीतर जाये चोर।

सादे पन्नों पर ऐसी आकृतियाँ बनती हैं,
भिंची हुई मुट्ठियाँ क्रोध में जैसे तनती हैं।
आँखों पर पट्टियाँ बाँधकर देखे नभ के छोर,
जैसे गांधारियाँ देखती धृतराष्ट्रों की ओर।

आवारा बदचलन हो गये सपने सभी भले,
जैसे किसी भले घर का लड़का कुपूत निकलें।
चीख चीख कर खुशियाँ मानव की ले रही हिलोर,
जैसे भीड़ भरी हाटों में बढ़ता जाये शोर।

संकेतो से नयन बहुत कुछ ऐसा ही हैं कहते,
जिस प्रकार प्रतिरोध बिना हम मार किसी की सहते।
लुटा-लुटा कर मन की निधियाँ होते रहे विभोर,
जैसे अपने पंख गँवाकर नाचे कोई मोर।

त्रासदियों से जूझ रहा मानव मन रोता है,
सूखी धरती खारे जल से रोज भिगोता है।
इतने आँसू गिरे कि छिल ही गयी नयन की कोर,
जीवन मरू हो गया दुखों की घिरी घटा घनघोर।

करो उपकार जगत का

कुछ तो ऐसा करो विधाता
जग का हो कल्याण
करो उपकार जगत का .....
हर मौसम खूनी मौसम है खून दिखे हर ओर,
खून में डूबी साँझ दिखे और खून में डूबी भोर।
आपा धापी मारा मारी
से व्याकुल है प्राण,
करो उपकार जगत का .....
राम करे अंधी दुनिया को मिल जायें दो नैन,
मानवता को शांति मिले हमको मिल जाये चैन।
तम का जाल कटे बरसाओ
वरदानों के बाण।
करो उपकार जगत का .....
हर मानव के मन में पनपी नफरत वाली बेल,
समझ न आये मेरे ईश्वर कैसा है ये खेल।
ऐसा जादू करो कि हिम-
बनकर पिघले पाषाण।
करो उपकार जगत का .....
हर चेहरे पर पाप लिखा है हर माथे पर झूठ,
हाथों में है वर्तमान के संदर्भो की मूठ।
कालचक्र फिर धारो प्रभु जी
करो नया निर्माण।
करो उपकार जगत का .....

नियमों की मानें या ऋतु की

नियम कह रहे पास न आओ,
ऋतु कहती है दूर न जाओ।
नियमों की मानें या ऋतु की,
कुछ तो ओ! प्रियतम समझाओ।

अधर मौन थे अधर मौन हैं,
मौन रहेंगे कुछ न कहेंगे।
पर बेचैनी के जंगल के,
अंगारे हम आज सहेंगे।
इतना भी संकोच न करना
मन की सीमा प्राण तोड़ दें,
स्वप्न भटकने लगें तिमिर में,
इनको सही राह दिखलाओ।

साँसे प्यासी आँखे प्यासी,
प्यासी हैं गीतों की कलियाँ।
प्यासी प्यासी फिरे राधिका,
प्यासी हैं कान्हा की गलियाँ।
इतना भी अब सोच न करना,
दिवस-रैन मनुहार छोड़ दें।
थकी भावना है जीवन की,
उसमें नई चेतना लाओ।

क्या पता कब

यह सुखो की भोर दुख के बीज बोये-
क्या पता कब?

क्या पता कब कौन इस पथ पर
चला आये रूलाने,
क्या पता कब कौन आ जाये
अनल के गीत गाने।
गुनगुनाती शांति मन की शांति खोये-
क्या पता कब?

क्या पता कब कौन सपनों
के महल वीरान कर दे,
क्या पता कब कौन आँधी
बस्तियां श्मसान कर दे।
देह की क्वाँरी गजल की आँख रोये-
क्या पता कब?

क्या पता कब कौन सोयी
भावनाओं को जगा दे,
क्या पता कब कौन पीछे
दोस्त ही दुश्मन लगा दे।
आत्मा के मंदिरों के देव सोये-
क्या पता कब?

विनय यही है

निर्बल को बल देने वाले जग के पालनहार।
विनय यही है आज हमारी पूजा लो स्वीकार।।

दूर तुम्ही करते हो पल में जो लाचारी हो,
मरू में सरिता बह निकले यदि कृपा तुम्हारी हो।
धरती को जल देने वाले बरसाओ जल धार।
विनय यही है आज हमारी पूजा लो स्वीकार।।

करो हमारा मार्ग प्रदर्शन तम की राहों में,
हमें सँवारों हमें निखारो अपनी बाँहों में।
पहना दो हम सबको दाता सुख सपनों का हार।
विनय यही है आज हमारी पूजा लो स्वीकार।।

जन्म ले रही दुर्बलतायें मानव के मन में,
अभिशापित छाया जीवन की भटके वन-वन में।
ओ प्रकाश के पुंज प्रकाशित कर दो अन्तः द्वार।
विनय यही है आज हमारी पूजा लो स्वीकार।।

तुम जो साथ हो

बात चाहे रात-रानी या कमल की हो,
चाहे चाँदनी धरा पे छलकी छलकी हो।
तुम जो साथ हो तो कल की बात कल की हो,
चार दिन की जिंदगी भी चार पल की हो।

तुम जो साथ हो तो आसमान साथ है,
तुम जो साथ हो तो ये जहान साथ है।
ये रात और दिन भी एक समान साथ है,
हमारी आत्मा के संग प्रान साथ है।
तुम जो साथ हो तो साँझ भी धुँधलकी हो,
बात चाहे कुंडली या राशिफल की हो।

तुम जो साथ हो तो उत्सवों की क्या कमी,
छू न पायेगी कभी भी आँख को नमी।
तुम गये जो दूर समझो साँस ये थमी,
एक निमिष में खण्ड-खण्ड होगी ये जमीं।
तुम जो साथ हो तो प्यास हलकी हलकी हो,
बात हो अमृत की या कि फिर गरल की हो।

तुम जो साथ हो तो पाँव भी शिखर चढ़ें,
कल्पनाओं में तुम्हारी मूर्तियाँ गढ़ें।
वो ढ़ाई अक्षरों का गीत प्रेम का पढ़ें,
तय किया जो मार्ग उसकी ही तरफ बढ़ें।
तुम जो साथ हो तो त्रासदी अनल की हो,
बात वो कठिन सी या कि फिर सरल की हो।

भूल नहीं पाता हूँ

भूल नहीं पाता हूँ तुमने जो दिया था,
भेंट में मुझे एक दिन रेशमी रूमाल जो।

देखकर उसे वे दिन याद आ रहे हैं,
लगता है जैसे वे खिलखिला रहे हैं।
हँसते हैं शाखों में फूल की तरह जो,
वे मेरे तन-मन को महमहा रहे हैं।
भुल नहीं पाता हूँ तुमने लिख दिया था,
मन के कागजों पर वो सोलहवाँ साल जो।

जिस रूमाल में मेरी भावनायें बंद हैं,
जिस रूमाल में पिछली स्मृतियाँ चंद हैं।
जिस रूमाल को प्राणों से बढ़कर मानता,
जिस रूमाल में मेरी खुशियों के छन्द हैं।
भूल नहीं पाता हूँ तुमने भर दिया था,
गीतों के सागर में व्योम सा उछाल जो।

कभी-कभी डँसते हैं नाग की तरह वे दिन,
कभी-कभी लगते हैं आग की तरह वे दिन।
कभी-कभी जो मेरी साँसों को बींधते,
लगते हैं बेवा की माँग की तरह वे दिन।
भूल नहीं पाता हूँ तुमने कर दिया था,
सपनों से जीवन का आखिरी सवाल जो।

यही देती हैं जीवन दान

बरखा की बूदें कर जाती पागल तन मन प्राण।
यही देती हैं जीवन दान।।

भीगी भीगी इनकी काया इनकी समझ न आई माया,
लौह धातु को कंचन करना इनसे सीख सुजान।
यही देती हैं जीवन दान।।

पुरवा के झीने आँचल में नाम लिखें इनका जल थल में,
इनके स्वागत में गायें समवेत स्वरों में गान।
यही देती हैं जीवन दान।।

इनकी अगर कृपा हो जाये जीने की सुविधा हो जाये,
घर-आँगन में गाँव गली में साथ चले भगवान।
यही देती हैं जीवन दान।।

देती ये वरदान अमृत सा मानो इनको पूजा-घृत सा,
इनका वंदन करो इन्ही से अपना है कल्याण।
यही देती हैं जीवन दान।।

अनागत कविता आंदोलन के प्रवर्तक डॉ. अजय 'प्रसून' द्वारा हिन्दी साहित्य के लिए किये गये कार्य एवं परिचय

नाम : डॉ. अजय प्रसून

पूरा नाम : डॉ. अजय कुमार द्विवेदी 'प्रसून'

पिता का नाम : स्व. श्री सरोज कुमार द्विवेदी

माता का नाम : स्व. श्रीमती कान्ती द्विवेदी

जन्म तिथि : 18-01-1954

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), बी.एम.एस. (होम्यो. चिकित्सक)

पत्नी : ममता द्विवेदी

सम्प्रति : प्रशिक्षण एवं सेवायोजन निदेशालय से प्रशासनिक अधिकारी पद से सेवानिवृत्त।

सम्पर्क सूत्रः माँ वैभव लक्ष्मी होम्यो क्लीनिक, 538/II/318 योगी नगर, त्रिवेणी नगर III, सीतापुर रोड, लखनऊ-226020 मोबाइल नं. 9305107455

: साहित्य-संसार :

प्रकाशित : (1) युग के आँसु (खण्ड काव्य), (2) गाओ गीत सुनाओ गीत, (3) महानगर के बीच (अनागत गजल-संग्रह), (4) बाँसुरी की भीतरी तह में (अनागत काव्य-संग्रह), (5) दर्पण शिलालेख हो जाये (अनागत गीत-संग्रह), (6) आँसुओ का बयान जारी है (अनागत गजल-संग्रह), (7) श्री हनुमान अस्सीसा, (8) श्री शनि अस्सीसा, (9) बच्चों की प्यारी कवितायें, (10) बच्चें गायें गीत, (11) बच्चों शिष्टाचार न भूलो

साहित्यिक उपलब्धियाँ : (1) हिन्दी साहित्य में अनागत कविता आंदोलन के प्रवर्तक रचनाकार (2) अनागत साहित्य हेतु कई रचनाकारों का कृति आंदोलन (3) देश की सभी पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताएं प्रकाशित (4) आकाशवाणी, लखनऊ के मान्यता प्राप्त गीतकार, समय समय पर आपके गीतों का संगीतमय प्रसारण (5) दूरदर्शन, लखनऊ द्वारा समय समय आपकी कविताओं का प्रसारण (6) एच.एम.बी., सा.रे.गा.मा. द्वारा डी.वी.डी. एवं कैसेट्स प्रसारित, साधना सरगम जी ने गीतों को गाया। (7) अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों के प्रतिष्ठित कवि (8) 'ताम्रपर्णी' पत्रिका का सम्पादन एवं प्रकाशन 1978-79 सम्पादित काव्य कृतियाँ (1) अनागत के कमल हम हैं (2) शब्द की शक्ति को बचाना है। (3) शब्द नये गढ़ने हैं । (9) हिन्दी गजल एवं बाल काव्य के कई शोधग्रंथों में आपकी चर्चा । (10) श्री राजेंद्र कृष्ण श्रीवास्तव जी द्वारा सम्पादित साहित्य प्रोत्साहन एवं श्री गौरी शंकर मिश्र जी द्वारा सम्पादित उ. प्र. मजदूर दर्पण द्वारा अनागत कविता विशेषांक का प्रकाशन।

साहित्यिक पुरस्कार : (1) उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा अनुशंसा पुरस्कार-1981, (2) आनन्द सोसायटी इन्टरनेशनल लखनऊ (3) रामचरित मानस समिति लखनऊ (4) 'साहित्य' प्रोत्साहन लखनऊ, (5) भारतीय डाक विभाग (6) मानस मण्डल लखनऊ (7) लायंस क्लब मुगलसरांय वाराणसी 1992 (8) हिन्दी प्रकाश मंच (9) सत्य अहिंसा बाल विद्यालय (10) नारी शक्ति संस्था लखनऊ (11) जागृति सेवा सदन द्वारा सम्मानित (12) लक्ष्य संस्था द्वारा साहित्य साधना सम्मान 2015 । सभी संस्थाओं द्वारा सम्मानित एवं प्रशस्ति-पत्र प्राप्त ।

निवेदक

संजय 'सागर'